ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका : प्रविधि एवं कठिनाइयाँ

(प्रतिनिधि ग्रन्थों के विशेष संदर्भ में)

(online pātañjalayogānukramaṇikā : pravidhi evaṃ kaṭhināiyāṃ pratinidhi granthoṃ ke viśeṣa saṃdarbha meṃ)

Dissertation submitted to Jawaharlal Nehru University
In partial fulfillment of the requirements
For the award of the
Degree of

MASTER OF PHILOSOPHY

By
Akhilesh Kumar Yadav

School of Sanskrit and Indic Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi - 110067
2018

संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय

नई दिल्ली, ११००६७

School of Sanskrit and Indic Studies

Jawaharlal Nehru University

New Delhi - 110067

21st July, 2018

DECLARATION

I declare that the dissertation entitled "ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका : प्रविधि एवं कठिनाइयाँ (प्रतिनिधि ग्रन्थों के विशेष संदर्भ में) (online pātañjalayogānukramaṇikā : pravidhi evaṃ kaṭhināiyāṃ pratinidhi granthoṃ ke viśeṣa saṃdarbha meṃ)" submitted by me for the award of degree of **Master of Philosophy** is an original research work and has not been previously submitted for any other degree or diploma in any other institution/University.

अखिलेश कुमार

(अखिलेश कुमार यादव)

संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय

नई दिल्ली, ११००६७

School of Sanskrit and Indic Studies

Jawaharlal Nehru University

New Delhi - 110067

21st July, 2018

CERTIFICATE

The dissertation ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका : प्रविधि एवं कठिनाइयाँ (प्रतिनिधि ग्रन्थों के विशेष संदर्भ में) (online pātañjalayogānukramaṇikā : pravidhi evaṃ kaṭhināiyāṃ (pratinidhi granthoṃ ke viśeṣa saṃdarbha meṃ) submitted by Akhilesh kumar Yadav to School of Sanskrit and Indic Studies Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110067 for the award of degree of **Master of Philosophy** is an original research work and has not been submitted so far, in part or full, for any other degree or diploma in any University. This may be placed before the examiners for evaluation.

Prof. Girish Nath Jha

(Dean, SSIS)

Dean
School of Sanskrit & Indic Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067, INDIA

Prof.Girish Nath Jha

(Supervisor)

PROF. GIRISH NATH JHA
Supervisor
School of Sanskrit & Indic Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067

पूजनीय भैयाजी सुभाष
चन्द के चरण कमलों में
सादर समर्पित.....

आभार

सर्वप्रथम मैं लघु शोधप्रबन्ध के निर्देशक प्रो. गिरिश नाथ झा जी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, आपके कुशल निर्देशन, प्रेरणा और सहयोग से ही संस्कृत और संगणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका है।

तदनन्तर मैं संस्कृत एवं प्राच्यविद्या संस्थान के अध्यक्ष प्रो. गिरिश नाथ झा तथा अन्य सभी प्राध्यापकों, प्रो. सी. उपेन्द्र राव, डॉ. रजनीश कुमार मिश्र, डॉ. रामनाथ झा, डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल, डॉ. हरिराम मिश्र, डॉ. सुधीर कुमार आर्य, डॉ. टी. महेन्द्र और डॉ. सत्यमूर्ति – के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी प्रेरणा तथा उचित मार्गदर्शन से मुझे अपना शोध कार्य सम्पन्न करने में सहायता मिली।

मेरे जीवन के आद्य-प्रेरणास्रोत माताजी, पिताजी और भैयाजी के चरणकमलों में श्रद्धापूर्वक प्रणाम, आप बाल्यकाल से ही मेरे प्रेरणा की प्रतिमूर्ति तथा कर्तव्यों के उपदेष्टा रहे हैं। एतदतिरिक्त मेरे भैया सुभाष चन्द और दिवाकर और भाभीजी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, आप से मुझे विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य और शक्ति मिलती रही है। मैं अपने दोस्त प्रभात कुमार राय, आयुष्मान यादव, सच्चिदानन्द नायक और सन्तोष के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जो हमेशा मुझे प्रेरित करते रहे हैं।

इसी क्रम में मैं अपने अग्रज डॉ. रवि प्रकाश सिंह, डॉ. सत्यम के. कवि खाङान्ब, दीपक साहू, रवि प्रकाश, और अनिल जी का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय और उचित परामर्श देते हुए, मेरा मार्गदर्शन किया।

अखिलेश कुमार यादव

विषय अनुक्रमणिका

आभार i

विषय अनुक्रमणिका ii

संक्षिप्ताक्षर vi

भूमिका 1

क. ई-अनुक्रमणिका 1

ख. भारत में योग शिक्षा के विश्वविद्यालय, संस्थान और केन्द्र 4

ग. योग और सरकारी नीतियाँ 5

घ. भारत में पारम्परिक योग प्रशिक्षण केन्द्र 6

ङ. अनुक्रमणिका 7

च. अध्याय विभाजन 8

प्रथम अध्याय : पातञ्जल योग दर्शन : विषय एवं संरचना 10

1.1. भारतीय योग दर्शन परम्परा में पातञ्जल योग सूत्र का स्थान 10

1.2. योग के आदि प्रवर्तक 10

1.3. योग शब्द का अर्थ एवं विकास अथवा योग विमर्श 13

1.4. योग के प्रकार 15

1.4.1. ज्ञानयोग 15

1.4.2. कर्मयोग 16

1.4.3. भक्तियोग 16

1.4.4. मन्त्रयोग 17

1.4.5. लययोग 18

1.4.6. हठयोग 18

1.5. पातञ्जलयोगशास्त्र की परवर्ती रचनाएँ 20

1.5.1. व्यासमुनिकृत, व्यासभाष्य 20

1.5.2. वाचपतिमिश्र कृत तत्त्ववैशारदी 21

1.5.3. विज्ञानभिक्षुकृत योगवार्तिक 22
1.5.4. भोजराजकृत राजमार्तण्डवृत्ति 22
1.5.6. शंकराचार्यकृत पातञ्जलयोगसूत्रभाष्यविवरण 23
1.5.7. अन्य कृतियाँ 24
1.6. पातञ्जल योगदर्शन : विषय एवं संरचना 24
1.7. योगदर्शन की तत्त्वमीमांसा 24
1.7.1. परिणामसिद्धान्त 24
1.7.2. ईश्वर 25
1.7.3. कर्मसिद्धान्त 25
1.7.4. विवेकख्यातिवाद 26
1.7.5. कैवल्य 26
1.8. योग की प्राचीनता 27
द्वितीय अध्याय : ऑनलाइन योगानुक्रमणिका बनाने की प्रक्रिया तथा डेटाबेस निर्माण 31
2.1. संस्कृत वाङ्मय आधारित अनुक्रमणिका निर्माण की परम्परा 31
2.2. ऋग्वेदीय अनुक्रमणिकाएँ 32
2.2.1. आर्षानुक्रमणी 32
2.2.2. छन्दोनुक्रमणी 32
2.2.3. देवतानुक्रमणी 33
2.2.4. अनुवाकानुक्रमणी 33
2.2.5. सूक्तानुक्रमणी 33
2.2.6. पादानुक्रमणी या पादविधान 33
2.2.7. ऋग्विधान 33
2.2.8. बृहद्देवता 33
2.2.9. चरणव्यूहसूत्र 34
2.2.10. ऋक्सर्वानुक्रमणी 34
2.3. यजुर्वेदीय अनुक्रमणिकाएँ 34

2.3.1. काण्डानुक्रम या काण्डानुक्रमणिका 34
2.3.2. सर्वानुक्रमणी या सर्वानुक्रमसूत्र 34
2.3.3. अनुवाक सूत्र या अनुवाकनुक्रमणी या अनुवाकाध्याय 34
2.4. सामवेदीय अनुक्रमणिकाएँ 35
2.4.1. सामसर्वानुक्रमणी 35
2.4.2. नैगेय शाखानुक्रमणी 35
2.5. पूर्ववर्ती शोध कार्य 36
2.6. शोध प्रविधि 39
2.6.1. योगसूत्र और इसके प्रतिनिधि ग्रन्थों के मूल पाठ का चयन 39
2.7. ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका प्रणाली का निर्माण 41
2.8. सम्बन्धित डेटाबेस प्रणाली का निर्माण 42
2.9. अन्वेषण हेतु जावा सर्वर इंजन का निर्माण 43
2.10. आउटपुट प्रदर्शन हेतु प्रतिनिधि वेबपेज का निर्माण 43
2.11. डेटाबेस एक्सेस के चरण 44
2.11.1. प्राथमिक चरण 44
2.11.2. द्वितीय चरण 44
2.11.3. तृतीय चरण 44
2.12. संगणक के अनुकूल योगानुक्रमणिका 45
तृतीय अध्याय : योगसूत्र की ऑनलाइन अनुक्रमणिका 49
3.1. योगानुक्रमणिका की संरचना 49
3.2. योगानुक्रमणिका की प्रक्रिया 50
3.2.1. पूर्वप्रक्रिया 51
3.2.2. योगसूत्र अनुक्रमणिका और डेटाबेस 51
3.2.3. आउटपुट का प्रथम चरण 51
3.2.4. आउटपुट का द्वितीय चरण 51
3.3. योगानुक्रमणिका का फ्रन्ट एन्ड (मुख पृष्ठ) 52

3.3.1. जावा सर्वर पेज 52

3.3.2. अपाचे टॉमकैट ४.० 57

3.4. जावा सर्वलेट तकनीकी 57

3.5. डेटाबेस का पारस्परिक संयोग 59

3.6. योगानुक्रमणिका तन्त्र का प्रयोग 59

उपसंहार 64

परिसीमाएं 64

भावी शोध 65

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 67

प्राथमिक स्रोत 67

द्वितीयक स्रोत 68

शोध एवं लघु शोधप्रबन्ध 73

कोश ग्रन्थ 74

लेख/पत्रिका 74

संक्षिप्ताक्षर

अथर्व.	अथर्ववेद
उ. सू.	उणादि सूत्र
ऋ. सं.	ऋग्वेदसंहिता
ऐत. आ.	ऐतरेयारण्यक
कठ. उप.	कठोपनिषद्
त.वै.	तत्त्ववैशारदी
तै. उप.	तैत्तिरीयोपनिषद्
तै. ब्रा.	तैत्तिरीयब्राह्मण
पात. यो. प्र.	पातञ्जलयोगप्रदीप
मनु.	मनुस्मृति
महा.	महाभारत
यजु. सं.	यजुर्वेदसंहिता
याज्ञ. स्मृति.	याज्ञवल्क्यस्मृति
यो. चू	योगचूडामणि
यो. त. उप.	योगतत्त्वोपनिषद्
यो. द.	योग दर्शन
यो. दि.	योग दिवाकर

यो. रा. उप.	योगराजोपनिषद्
यो. वा.	योग वार्तिक
यो. शि. उप.	योगशिखोपनिषद्
यो. सू.	योगसूत्र
यो.शि.उप	योगशिखोपनिषद्
रा.मा.वृ.	राजमार्तण्डवृत्ति
रामा.	रामायाण
वा. पु.	वायु पुराण
वृह. उप	वृहदारण्यकोपनिषद्
शु. यजु.	शुक्लयजुर्वेद
श्रीमद्. गी	श्रीमद्भगवद्गीता
श्रीमद्. भा.	श्रीमद्भागवत
श्वे. उप.	श्वेताश्वतरोपनिषद्
सम.यो.	समग्र योग
सा. सं	सामवेदसंहिता
API	Application Programming Interface
HTML	Hyper Text Markup Language
HTTP	Hyper Text Transfer Protocol
JDBC	Java Database Connectivity

JDK	Java Development Kit
JSP	Java Server Pages
JSP	Java Server Pages
MS	Microsoft
MS-SQL	Microsoft Structure Query Language
NLP	Natural Language Processing
PDF	Portable Document Form
RDBMS	Relational Database Management System
SQL	Structured Query Language

भूमिका

क. ई-अनुक्रमणिका

ई-अनुक्रमणिका एक कम्प्यूटर प्रोग्राम है जो तथ्यात्मक सूचना की पुनर्प्राप्ति की सुविधा के लिए आकड़ों (डेटा) को संग्रह और विश्लेषण (*Parses*) करता है। ई-अनुक्रमणिका का उद्देश्य तकनीकी के माध्यम से पारंपरिक ग्रंथों के सूचनाओं को ऑनलाइन करना है। इंटरनेट के प्रयोग से किसी भी सूचना को सूचीबद्ध करके बनाये गए ई-अनुक्रमणिका की प्रक्रिया को वेब इंडेक्सिंग (*Web indexing*) है। ई-अनुक्रमणिका का उद्देश्य सूचना और कम्प्यूटेशनल तकनीक के माध्यम से पारंपरिक ग्रंथों को स्थायी तथा अन्वेषित करने योग्य बनाना है। ई-अनुक्रमणिका मूल रूप से दो प्रकार का होता है- स्थिर प्रणाली (*static system*) और गतिशील प्रणाली (*dynamic indexing system*)। इनमें प्रथम संकलित डेटा के आधार पर अन्वेषण करता है जबकि दूसरा गतिशील डेटा आधार पर कार्य करता है।

भारतीय दर्शनों में महर्षि पतञ्जलि के सिद्धान्तों का एक विशिष्ट स्थान है। महर्षि पतञ्जलि का योग-दर्शन राजयोग नाम से प्रसिद्ध है तथा सांख्य-दर्शन से सम्बद्ध है। सांख्य और योग को एक ही सम्प्रदाय के दो रूप स्वीकार किया जाता है। सांख्य सिद्धान्तों का या तत्त्वों का वर्णन है, योग उस तत्त्व-ज्ञान (*असम्प्रज्ञात योग*) की प्राप्ति हेतु प्रायोगिक साधना का विवेचन करता है। सांख्य की तत्त्वमीमांसा या ज्ञानमीमांसा को योग प्राय: उसी रूप में स्वीकार कर लेता है। योग दर्शन ने ईश्वर की सत्ता स्वीकार की है, अत: इसे सेश्वर सांख्य भी कहा जाता है।[1] गीता में सांख्य को ज्ञान और योग को कर्म माना जाता है तथा वस्तुतः दोनों मिल कर एक हो जाते हैं।

योग दर्शन शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं की सैद्धान्तिक विवेचना करता है। अति प्राचीन काल से भारत में योग न केवल भौतिक जीवन को सुदृढ़ बनाने का बल्कि आध्यात्मिक साधना का भी माध्यम रहा है। भारतीय दर्शनों का चरम लक्ष्य प्राणियों को त्रिविध (आत्यन्तिक, आधिभौतिक और आधिदैविक) दु:खों से मुक्ति दिलाना है।

---

[1] भारतीय दर्शन : आलोचना और अनुशीलन, पृ. सं.१५८

आज के आधुनिक युग में भी योग दर्शन की प्राथमिकता को स्वीकार किया जाता है जितना की प्राचीनकाल में स्वीकार किया जाता था। योग दर्शन की महनीयता के विषय में महाभारत में शुकदेवजी ने ठीक ही कहा है कि "न तु योगमृते प्राप्तुं शक्या सा परमा गति:"

गीता में योग को दु:ख-संयोग का वियोग बताया गया है जो सांख्यसम्मत दु:ख की आत्यन्तिक निवृत्ति की ओर संकेत करता है, किन्तु साथ ही उसे, सांख्य के विपरीत, अनन्त आनन्द या आत्यन्तिक सुख भी बताया है। योग वह स्थिति है जहाँ योगी बड़े से बड़े दु:ख से भी विचलित नहीं होता, जिस स्थिति से बढ़कर अन्य कोई लाभ नहीं मानता और जिस स्थिति में वह आत्यन्तिक सुख का अनुभव करता है। गीता में ही योग को चित्त-निरोध एवं समत्व (समत्वं योग उच्यते) तथा ब्रह्म-भाव भी बताया गया है।[2] गीता के अनुसार योग में ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय हो जाता है। योग दर्शन की इस असामान्य उपलब्धि और असाधारण मोक्षपरायण के महत्त्व को गीता में कहा गया है कि-

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिक:।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन॥[3]

योग मूलत: मन और शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक है। यह व्यक्ति की सार्वभौमिक सत्ता को सुदृढ़ करता है।[4] महर्षि पतञ्जलि द्वारा परिष्कृत योगाभ्यास का मार्ग सर्वदेश, सर्वकाल और सर्वजनों के लिए लाभदायक है। योग साधना का आचरण शाश्वत कल्याण का मार्ग है, जो प्रत्येक मनुष्य के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र और आयु में समान रूप से उपयोगी है। योग शरीर और मन को स्वस्थ रखने की प्राचीन प्रणाली है। योग मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

योग के द्वारा व्यक्ति का न केवल तनाव दूर होता है बल्कि मन और मस्तिष्क भी शान्त रहता है। योग जीवन जीने की कला है जिसका लक्ष्य स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास करना। योग प्रायोगिक विज्ञान है जो मनुष्य को प्रकृति से जोड़ता है। योग के द्वारा मनुष्य शरीर, आत्मा और मन को केन्द्रित करते हैं तथा आन्तरिक और बाह्य शक्ति प्रदान करता है। योग केवल शारीरिक क्रिया नहीं है वरन मनुष्य के मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक विचारों को नियन्त्रण के योग्य बनाता है। योग से न केवल एकाग्रता बल्कि व्यक्ति में उत्साह और कार्य करने की क्षमता का विकास भी होता है। वर्तमान परिवेश में योग न केवल

---

[2] भारतीय दर्शन : आलोचन और अनुशीलन, पृष्ठ सं.१५८

[3] श्रीमद्भगवद्गीता ६।४६।

[4] Secret of Patanjali Yoga, Chapter 1

हमारे लिए लाभकारी है बल्कि सम्पूर्ण विश्व के बढ़ते प्रदूषण के द्वारा उत्पन्न समस्याओं के निवारण के सन्दर्भ में योग की सार्थकता बढ़ गयी है। यही कारण है आधुनिक युग में सम्पूर्ण विश्व योग को प्राथमिकता दे रहा है।

योग भारतीय संस्कृति की धरोहर है। आज सम्पूर्ण विश्व में योग को लेकर नये-नये अनुसन्धान और प्रयोग हो रहे हैं। वर्तमान समय में योग न केवल विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रमों अपितु सामान्य जनसमूह की चर्चाओं का केन्द्रीय विषय बन चुका है। इसी वैश्विक विस्तार के कारण योग में नवीन शोधों और अनुसन्धानों के लिये अनेक द्वार खुले हैं। इस प्रकार योग स्वयं में प्राचीन होते हुए भी चिर-नवीन अनुशासन के रूप में प्रकट हुआ है।

योग न केवल व्यायाम है वरन् आत्मा का विश्व और प्रकृति के साथ एकत्व-भाव भी विकसित करता है। भगवद्गीता में कहा गया है- "योग: कर्मसु कौशलम्" अर्थात् कार्यों का कुशलता से निष्पादन ही योग है।[5]

आधुनिक समय में योग का विश्वव्यापी महत्त्व हो गया है। २७ सितम्बर २०१४ को संयुक्त राष्ट्र महासभा (*UNGA*) ने २१ जून को "अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस" मनाने का संकल्प लिया।[6] फलस्वरूप २१जून २०१५ को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का विश्व भर में आयोजन किया गया था। तदुपरान्त प्रत्येक वर्ष में यह २१ जून को सकुशल सम्पन्न होता है।

संयुक्त राष्ट्र के बाद अब यूनेस्को (*UNESCO*) ने योग को सांस्कृतिक विरासत की अपनी प्रतिनिधि सूची में शामिल किया है। अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में योग की सुरक्षा के लिए अंतर सरकारी समिति के ११ वें सत्र के दौरान इथियोपिया के अदीस अबाबा में निर्णय लिया गया था।[7]

विश्व स्वास्थ्य संगठन (*WHO*) भी अब योग के प्रचार-प्रसार में शामिल हो गया है। सार्वजनिक क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य के लिए काम करने वाला ये अंतरराष्ट्रीय संगठन अब योग के ज़रिए लोगों को बेहतर जीवन देने की कोशिश करेगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारतीय शोधार्थियों के माध्यम से यह पता लगाने की कोशिश की है कि योग का आर्थराईटिस, डायबिटीज, दिल की बीमारी, तनाव और दिमागी असंतुलन जैसी बीमारियों पर कैसा प्रभाव पड़ सकता है।

---

[5] भगवद्गीता, २।५०

[6] http://yoga.ayush.gov.in/

[7] https://en.unesco.org/

ख. भारत में योग शिक्षा के विश्वविद्यालय, संस्थान और केन्द्र

आजकल सम्पूर्ण विश्व योग को प्राथमिकता दे रहा है। योगशिक्षा की अनेक संस्थाएँ स्थापित की जा रही हैं। जैसे- योग विश्वविद्यालयों, योग कालेजों, प्राकृतिक चिकित्सा कालेजों, योग प्रशिक्षण केन्द्र तथा योग अनुसंधान केन्द्र। भारत में योगशिक्षा संस्थान और वहाँ का पाठ्यक्रम तथा योग-चिकित्सा पद्धति इस प्रकार है -

1. **मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली**

पाठ्यक्रम :

- *Diploma in Yoga Science*
- *Certificate Course in Yoga Science*
- *Foundation Course in Yoga Science*

2. **स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान संस्थान, बंगलौर**

पाठ्यक्रम :

- *Ph.D. Yoga*
- *M.Phil. Counselling & Yoga Therapy*
- *M.A. Yoga, Journalism & Mass Communication*
- *B.Sc. Yoga Management*
- *B.Sc. Yoga & Consciousness*
- *B.Sc. Yoga Education*
- *PGD in Yoga Therapy for Doctors*
- *PGD in Yoga Therapy*
- *BNYS (Bachelor of Naturopathy and Yoga)*
- *B.Sc. Yoga & Management*
- *M.Sc. Yoga & Consciousness*
- *Yoga Therapy Orientation Training for Doctors*
- *Yoga Teachers Training Course*
- *Yoga Instructor Course*

3. पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम :

- *B.A. in Yoga Science Certificate Course in Yoga Therapy*
- *B. Sc. in Yoga*
- *M.A. in Yoga Science*
- *M.Sc. in Yoga Science*
- *PGD in Panchkarma, PGD in Yoga Science*
- *PGD in Yoga Health and Cultural Tourism*

- *M.Phil. & Ph.D. in Yoga*

4. देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम :

- *M.Sc.Yogic Science & Holistic Health*
- *PGD in Human Consciousness, Yoga & Alternative Therapy*
- *Certificate in Yoga and Alternative Therapy*

5. राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

पाठ्यक्रम :

- *PGD in Yoga Therapy and Stress management*
- *PGD in Yoga Vijnana*

6. लकुलीश योग विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

पाठ्यक्रम :

- *Ph.D. in Yoga,*
- *PGD in Yoga Therapy*
- *M.Sc. in Yoga*
- *M.A. in Yoga*
- *B.Sc. in Yoga*
- *B.A. (Karma, Gyan and Bhakti Yoga)*
- *Yoga Instructor Training Course Diploma in Yoga*

उपर्युक्त योग विश्वविद्यालयों, योग कालेजों के अतिरिक्त अन्य योग के विश्वविद्यालय भी है।[8] इन संस्थानों में योग का अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है और योग-चिकित्सा पद्धति के द्वारा प्राकृतिक विधि से शरीर के सभी रोगों का उपचार किया जाता है। इस पद्धति में योगासन, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यौगिक आहार आदि सम्मिलित हैं।

ग. योग और सरकारी नीतियाँ

भारत सरकार के आयुष मन्त्रालय द्वारा योग को प्रोत्साहित करने के लिए योग दिवस, योग अनुसन्धान केद्र और योग चिकित्सा पद्धति का आयोजन किया जा रहा है।

[8] http://www.gyanunlimited.com/education/list-of-yoga-universities-colleges-and-institutions-in india/9477/

जैसे- 'केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसन्धान परिषद्' (*CCRYN*) जिसका उद्देश्य योग और प्राकृतिक चिकित्सा को शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुसन्धान और अन्य कार्यक्रमों से योग का प्रचार करना तथा स्वास्थ्य को बढ़ावा देना है। साथ ही योग और प्राकृतिक चिकित्सा के मौलिक और व्यावहारिक पहलुओं में वैज्ञानिक अनुसन्धान और विकास करना तथा समन्वय स्थापित करना है।[9]

राष्ट्रीय संस्थान जैसे- 'मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान' (*MDNIY*) संस्थान में योग पाठ्यक्रम (योग-विज्ञान में डिप्लोमा, योग-विज्ञान में सर्टिफिकेट कोर्स योग-विज्ञान में फाउंडेशन कोर्स) और योग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।[10]

आयुष मन्त्रालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस को अब तक चार बार मनाया जा चुका है-

- प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस- २१ जून २०१५ को राजपथ, नई दिल्ली। इस कार्यक्रम का विषय "सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए योग" है।
- द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस- २१ जून २०१६ चंडीगढ़। इस कार्यक्रम का विषय "युवाओं से जुड़ने के लिए योग"।
- तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस- २१ जून २०१७ लखनऊ। इस कार्यक्रम का विषय "कल्याण के लिए योग"।
- चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस- २१ जून २०१८ देहरादून। इस कार्यक्रम का विषय "शान्ति के लिए योग"।

घ. भारत में पारम्परिक योग प्रशिक्षण केन्द्र

भारत में पारम्परिक योग प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये गये हैं। इनका उद्देश्य योग का वैश्विक स्तर पर विस्तार करना है। इन योग संस्थानों में शिविरों का आयोजन किया जाता है तथा शिविरों में योगासन और योग-चिकित्सा द्वारा लोगों को प्रशिक्षित किया जाता है। इन प्रशिक्षण केन्द्रों में योगकर्ताओं को न केवल शारीरिक अपितु उनकों मानसिक, बौद्धिक एवं सामाजिक स्तरों का भी विकास होता है। योग से ही व्यक्ति का तन-मन स्वस्थ्य रहेगा और

[9] http://www.ccryn.org/about-us.html

[10] http://www.yogamdniy.nic.in/Contents.aspx?lsid=287&lev=1&lid=245&langid=1

जीवन सुख-समृद्ध होगा क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का विकास होता है।[11] कुछ प्रमुख योग प्रशिक्षण केन्द्र और योग संस्थान इस प्रकार हैं -

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश- इस केन्द्र में योग फाउंडेशन कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, योग आसन, कर्म योग का प्रशिक्षण दिया जाता हैं।

शिवानन्द योग वेदान्त केन्द्र और आश्रम, केरल - इसका उद्देश्य पारम्परिक योग की शिक्षाओं का विस्तार करना है तथा योग के अध्ययन और अभ्यास के लिए उचित निर्देशन दिया जाता है। यहाँ पर योगासन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार का अभ्यास कराया जाता है। यहाँ चार सप्ताह के शिविर का आयोजन किया जाता है।[12]

योग संस्थान, मुम्बई- योग संस्थान द्वारा योग प्रशिक्षण और योग-चिकित्सा सम्बन्धी परामर्श प्रदान किया जाता है। यह योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी संचालित करता है। यह संस्थान योग चिकित्सा, आसन, प्राणायाम, पारंपरिक योग शास्त्र, और योग शिक्षा जैसे विषयों पर पुस्तकें भी उपलब्ध कराता है।[13] इनके अतिरिक्त और भी योग संस्थान कार्यरत हैं जैसे-

- बिहार योग विद्यालय, बिहार
- कृष्णमाचार्य योग मन्दिरम्, चेन्नई
- राममनी आयंगर मेमोरियल योग संस्थान, पुणे
- अष्टांग संस्थान, मैसूर
- शिवानन्द योग वेदान्त केन्द्र और आश्रम, केरल और तमिलनाडु

ङ. अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका निर्माण के प्रथम चरण में सर्च इंजन बनाया जाता है। अनुक्रम प्रणाली के उपयोग से संस्कृत ग्रन्थों के विभिन्न एनएलपी (*NLP*) अनुप्रयोगों जैसे- संस्कृत वर्डनेट (संस्कृतशब्दबन्ध कोश), शब्दकोश, संस्कृत-भारतीय भाषा मशीन अनुवाद प्रणाली (*MIS*) आदि का निर्माण किया जा सकता है। यह कार्य न केवल संस्कृत के एनएलपी (*NLP*) प्रणाली

---

[11] श्वेताश्वतरोपनिषद् २।१२

[12] http://sivananda.org.in/neyyardam/

[13] http://theyogainstitute.org/know-us-better/

में एक आवश्यक स्रोत, बल्कि भारतीय परम्परा के ज्ञान के विषय में प्रामाणिक और सन्दर्भ के लिए भी उपयोगी हो सकता है।

अनुक्रमणिका का शाब्दिक का अर्थ है- सुव्यवस्थित क्रमबद्ध विषय-ग्रन्थ तालिका या शब्द-सूची। अनुक्रमणिका उसे कहते हैं जो किसी ग्रन्थ के सम्बन्ध में सूचना प्रदान करें। अनुक्रमणिका एक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करती है जो किसी शोधकर्ता को जानकारी प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है। उदाहरण के लिए पुस्तक के प्रारम्भ में दी गई विषय सूची एक अनुक्रमणिका है, जो पाठकों को यह जानने में सहायता प्रदान करती है कि कौन-से विषय का वर्णन किस पृष्ठ पर किया गया है। अनुक्रमणिका किसी पुस्तक में चर्चित शब्दों या पदों की सूची होती है। अनुक्रमणिका सम्बन्धित पद या शब्द के पुस्तक आदि में प्रयोग का स्थान बताती है। अनुक्रमणिका पुस्तकों की ही नहीं, बल्कि किसी पुस्तक या लेख आदि में प्रयुक्त शब्दों या पदों की सूची होती है। अनुक्रमणिका प्राय: पुस्तक के रूप में होती है इसलिए इसको पत्र-पुस्तक-अनुक्रमणिका भी कहते है। अनुक्रमणिका का उपयोग विशेष पाठकों, लेखकों आदि के लिए किया जाता है।[14]

ब्रिटानिका विश्वकोश अनुक्रमणिका को इस प्रकार परिभाषित करता है : अनुक्रमणिका किसी विशेष लेखक, विषय या मुख्यपद (*keyword*) से सम्बन्धित आकड़ों को अकारादि क्रम में व्यवस्थित करता है। जैसे- ग्रंथसूची सम्बन्धी सूचना या व्यापक साहित्यिक ग्रन्थ की सूचना पर आधारित। अनुक्रमणिका कुछ विशेष वस्तुओं जैसे शीर्षक या नाम की सूची है जो प्रत्येक विषय के पृष्ठ संख्या को सूचित करता है।[15]

च. अध्याय विभाजन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को तीन अध्यायों में विभाजित किया गया है। **प्रथम अध्याय** 'पातञ्जल योगदर्शन – विषय तथा संरचना'। इस अध्याय में मुख्य रूप से भारतीय योग दर्शन परम्परा में पातञ्जल योग सूत्र का स्थान, योग के आदि प्रवर्तक, योग शब्द का अर्थ एवं विकास, योग के प्रकार, पातञ्जल योगशास्त्र की परवर्ती रचनाएँ, विषय एवं संरचना, योगदर्शन की तत्त्वमीमांसा तथा योग का इतिहास आदि विषयों का वर्णन किया गया है।

---

[14] simpilified library cataloguing theory.

[15] http://www. britannica.com/bps/dictionary?query=index.

द्वितीय अध्याय ऑनलाइन योगानुक्रमणिका बनाने की प्रक्रिया एवं डेटाबेस (सूचनाधार) निर्माण' है। इस अध्याय में शोध प्रविधि, संस्कृत परम्परा में अनुक्रमणिका के इतिहास तथा पूर्ववर्ती शोध कार्यों का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय 'योगसूत्र का ऑनलाइन अनुक्रमणिका' है। इस अध्याय में सर्च इंजन (*Search Engine*), जावा सर्वर पेज (*Java Server Pages*), अपाचे टॉमकैट ४.० (*Apache Tomcat 4.0*) का वर्णन किया जायेगा जैसे- *RDBMS (Relational Database Management System*) तकनीक प्रोग्राम के साथ सर्च इंजन को विकसित करने और योगानुक्रमणिका की कार्यपद्धति का वर्णन किया गया है।

पातञ्जल योग दर्शन : विषय एवं संरचना

तत्त्व-साक्षात्कार या आत्म-साक्षात्कार के लिये योग-साधना की आवश्यकता प्राय: सभी दर्शनों एवं भारतीय धार्मिक सम्प्रदायों ने मुक्तकण्ठ से स्वीकार की है। सविकल्पक बुद्धि को निर्विकल्प प्रज्ञा में परिणत करने हेतु योग-साधना की उपादेयता का वर्णन सर्वत्र उपलब्ध है।[16]

1.1. भारतीय योग दर्शन परम्परा में पातञ्जल योग सूत्र का स्थान

भारतीय दर्शनों में योग दर्शन का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लगभग सभी दर्शनों में यत्किञ्चित योग तत्त्व का निरूपण किया गया है। महर्षि पतञ्जलि ने योग-सूत्र को समुचित दार्शनिक रूप दिया है। योगदर्शन में योग और उससे सम्बन्धित योगोपयोगी पदार्थों का ही विशुद्ध रूप से वर्णन किया गया है।[17] बृहदारण्यक उपनिषद् में तो स्पष्ट रूप से योग का महत्त्व स्वीकार करते हुऐ ऋषि याज्ञवल्क्य ने निदिध्यासन योग की ओर संकेत किया है।[18] मन को एकाग्र करने का उपाय योगदर्शन में ही बताया गया है।

1.2. योग के आदि प्रवर्तक

भारतीय परम्परा में ब्रह्मा व हिरण्यगर्भ[19] योगविद्या को प्रथम वक्ता स्वीकार किया जाता है। यही कारण है कि महाभारत, अहिर्बुध्न्यसंहिता, मनुस्मृति, भामती, योगियाज्ञवल्क्य आदि ग्रन्थों में हिरण्यगर्भ को योग का आदिवक्ता कहा गया है।[20] योग के प्रथम सूत्र का व्याख्यान करते हुए भाष्यकार व्यास ने कहा है- "अथ इति अयम् अधिकारार्थ:" इस सन्दर्भ के 'अयम्' पद की व्याख्या करते हुए, वाचस्पति मिश्र ने लिखा है- "ननु हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्य: पुरातन' इति योगियाज्ञवल्क्यस्मृते: कथं

---

16 भारतीय दर्शन : आलोचन और अनुशीलन. पृ.सं.१५८

17 योगस्योद्देशनिर्देशो, तदर्थ वृत्तिलक्षणम्।
योगोपाय: प्रभेदाश्च, पादेऽस्मिन्नुपवर्णिता:॥ त.वै. पृ.सं.१३५

18 आत्मा वा अरे दृष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य:। बृहदा.उप.

19 हिरण्यगर्भो योगस्य वेत्ता नान्य: पुरातन:।
अग्नि स: कपिलो नाम सांख्ययोगप्रवर्तक:॥ महाभारत

20 महाभारत, ११।३।४९-६५, अहिर्बुध्न्यसंहिता, १२।३९ मनुस्मृति, १।८८-८९ भामती, २।१।३ योगियाज्ञवल्क्य, १२।५

पतञ्जलेर्योगशास्त्रवक्तृत्वमित्याशंक्य सूत्रकारेणोक्तम्- 'अनुशासनम्' इति शिष्टस्य शासनमनुशासनमित्यर्थः"।[21]

हिरण्यगर्भ रचित योगविद्या शास्त्र को पतञ्जलि मुनि द्वारा अनुशासित अर्थात् उपजीव्य शास्त्र स्वीकार किया जा सकता है। योगीराज सदाशिवेन्द्र सरस्वती तथा नागोजी भट्ट ने भी इस तथ्य को "अनेने हिरण्यगर्भाद्युपदिष्टस्यैव योगस्थ विविच्य बोधनमत्र ध्वनतया प्रामाण्यमस्य सूचितम्" लिखकर अंगीकार किया है।[22]

विचारणीय यह है कि हिरण्यगर्भ कौन थे? कहाँ और कब थे? ये प्रजापति ब्रह्मा ही थे अथवा कोई और ऋषि या मुनि? इस सन्दर्भ में वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणग्रन्थों एवम् उपनिषदों और महाभारत[23] आदि प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन करने पर यही धारणा बनती है कि योग के प्राचीनतम[24] उपदेष्टा के रूप में प्रसिद्ध हिरण्यगर्भ आदि विद्वान् परमर्षि कपिल ही थे। शंकराचार्य और वाचस्पति[25] भी इसी तथ्य की स्वीकृति देते है। इन्हीं हिरण्यगर्भपरनामा कपिल ने सर्वप्रथम सांख्य-योग का उपदेश किया था। श्रीमद्भागवत में कपिलोक्त मत को आत्मयोगगुह्य कहा गया है।[26] कदाचित सांख्य और योग दोनों उस पुरातन काल में एक ही दर्शन के सम्मिलित नाम थे। एक तत्त्व-सिद्धान्त था और दूसरा उस सिद्धान्त को साक्षात्कार करने का साधन-पथ था। इसीलिये श्वेताश्वतरोपनिषद् में इस प्रकार कहा गया है-

तत्कारणं सांख्ययोगाभिपन्नं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः।[27]

सांख्य और योग दोनों दर्शन अलग-अलग नाम से वर्णित किए गए हैं, किन्तु वास्तव में वे एक ही है। यथा-

---

[21] त. वै.पृ.सं. ६१

[22] पातञ्जल-योगदर्शनम्.पृ.सं.१७

[23] विद्यासहायवन्तमादित्यस्थं समाहितम्।
कपिलं प्राहुराचार्यो: सांख्यनिश्चितनिश्चिता:॥
हिरण्यगर्भो भगवानेषच्छन्दसि सुस्तुत:।
सोऽहं योगरतिर्ब्रह्मन्! योगशास्त्रेषु शब्दित:॥ महाभा. ३३९। ६८-६९

[24] कपिलोऽग्रज इति पुराणवचनात् कपिलो हिरण्यगर्भो वा व्यपदिश्यते। श्वे.उप.शाङ्करभाष्य

[25] कपिलो नाम विष्णोरवतारविशेष: प्रसिद्ध: स्वयम्भूहिरण्यगर्भस्तस्यापि सांख्ययोगप्राप्तिर्वेदे श्रूयते।
स एवेश्वर आदिविद्वान् कपिलो विष्णु: स्वयम्भूरिति भाव:॥ त.वै.पृ.सं.१।२५

[26] य इदमनुश्रृणोति योऽभिधत्ते कपिलमुनेर्मतमात्मयोगगुह्यम्।
भगवती कृतधी: सुवर्णकेतावुपलभते भगवत्पदारविन्दम्॥ श्रीमद्भागवत. ३।३३।३७

[27] श्वे.६।१३

सांख्ययोगौ पृथग्बाला: प्रवदन्ति न पण्डिता:।

एकमप्यास्थित: सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्॥

यत्सांख्यै: प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।

एकं सांख्यं च योगं च य: पश्यति स पश्यति॥[28]

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से सिद्ध हो जाता है कि अपने मूल रूप में (कपिलोक्त रूप में) सांख्य और योग, एक ही दर्शन के क्रमश: सैद्धान्तिक और साधनात्मक भाग या पहलू थे। इसीलिये महाभारत में ऐसे सांख्यशास्त्र की ओर स्पष्ट संकेत है, जिसमें साधनात्मक और सैद्धान्तिक भाग का भी निरूपण है। उस साधनात्मक भाग में शम, योगजन्य परमैश्वर्य, तपस्या और समाधिकालिक सात्त्विक आनन्द का स्फुट निर्देश इन शब्दों में हुआ है-

शमश्च दृष्ट: परमं बलं च ज्ञानं च सांख्यं च यथावदुक्तम्।

तपांसि सूक्ष्माणि सुखानि चैव सांख्ये यथावद्विहितानि राजन्॥

अत: योग का सर्वप्रथम वक्ता हिरण्यगर्भ को स्वीकार किया जाता जाता है।[29] ये द्युतुमान् हिरण्यगर्भ वही हैं, जिनकी वेद में स्तुति की गयी है। इनकी योगी लोग नित्य पूजा किया करते हैं और संसार में इन्हें विभु कहते हैं।[30]

इन हिरण्यगर्भ भगवान् को समष्टि बुद्धि भी कहते हैं। इन्हीं को योगी लोग महान अर्थात् महत्तत्त्व तथा विरञ्चि और अजन्मा भी कहते हैं।[31] हिरण्यगर्भ जगत् के अन्तरात्मा हैं।[32]

कपिल को आदि-विद्वान्, परमर्षि, सिद्धेश और निर्माण-चित्त का अधिष्ठाता भी कहा जाता है। इन विशेषणों से भी लगता है कि जिस ऋषि का नाम कपिल या हिरण्यगर्भ था, वह आदिविद्वान् अर्थात् सांख्योपदेष्टा तथा सिद्धेश है। महाभारत में उन्हें ही योग का प्रवर्तक कहा गया है-

---

[28] श्रीमद्.भा.५।४-५

[29] इदं हि योगेश्वरं योगनैपुणं हिरण्यगर्भो भगवाञ्जगाद यत्। श्रीमद्भ. ५।१९।१३

[30] हिरण्यगर्भो द्युतिमान् य एषच्छन्दसि स्तुत:। योगै: सम्पूज्यते नित्यं स च लोके विभु स्मृत:॥ महा. १२।३४२।९६

[31] हिरण्यगर्भो भगवानेषु बुद्धिरिति स्मृत:। महानिति च योगेषु विरञ्चिति तथाप्यज:॥ पातञ्जलयोगप्रदीप पृ.सं.१६९

[32] हिरण्यगर्भो जगदन्तरात्मा। पा.यो.प्र. पृ.सं.१६९

कपिलं परमर्षि च यं प्राहुर्यतय: सदा।

अग्नि: स कपिलो नाम सांख्ययोगप्रवर्तक:॥[33]

अश्वघोष के "बुद्धचरित" १२।२० में भी कपिल को ही योग का प्रथम-प्रवर्तक स्वीकार किया गया है। जैन धर्मग्रन्थ "औपपतिक सूत्र" का कथन- "कापिलं साख्ययोगी" भी यही संकेत करता है कि कपिल या हिरण्यगर्भ ही योग के मूलप्रवर्तक है।

1.3. योग शब्द का अर्थ एवं विकास अथवा योग विमर्श

योग शब्द "युजिर्योगे" धातु से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है जुड़ना अर्थात् जीवात्मा का परमात्मा के साथ मिल जाना अथवा एक हो जाना। वस्तुत: जीवत्व-भाव का विलोप करके ब्रह्म भाव में स्थित हो जाना ही योग है। युज् धातु से निष्पन्न योग शब्द का अर्थ है समाधि। मनकी समाधि-स्वरूपता ही परम योग है, यही समाधि योग का परम लक्ष्य है- "परो हि योगो मनस: समाधि:"।[34]

जोतना या संयोजित करना इस अर्थ में "युग शब्द" का प्रयोग वैदिक संहिताओं और ब्राह्मण गन्थों में अनेक स्थान पर हुआ है जो योक (*एकजुट होना*), जर्मन भाषा के जोक (*Jock*), ऐग्लों सेक्सन के गेओक (*Geoc*) इउक (*Iuc*), और इओक (*Ioc)* की, तथा लैटिन के इउगम (*Iugum*) की एवं ग्रीक युगाँ (*zugon*) के समतुल्य स्वीकार किया जाता है।[35]

योग शब्द का प्रयोग ३००० ई.पू. में जोड़ने या संयोजित करने के अर्थ में था। ७०० से ८००ई.पू. के साहित्य में योग शब्द का प्रयोग, इन्द्रियों को प्रवृत्त करने और सभी इन्द्रियों को वशीकृत करके ब्रह्म-ध्यान-परायण हो जाने के अर्थ किया गया है।[36] वैदिक काल में योग का मूल अर्थ था, जोतना या संयोजित करना, शरीर के रथ में इन्द्रियों के घोड़े को जोतना या

---

[33] महाभा.११।३।६५

[34] श्रीमद्भागवतम.११.२३.४५

[35] एस.एन.दासगुप्ता.पृ.सं १७९

[36] एस.एन.दासगुप्ता.पृ.सं १७९

बुद्धिमानी पूर्वक शरीर की चेष्टाओं को नियन्त्रण में रखना। बृहदारण्यकोपनिषद् में रथयोग शब्द, रथ से जोड़े गये घोड़ों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।[37]

ऐतिहासिक तौर योग किसी न किसी रूप में वैदिक काल (२७०० ई.पू) से ही प्रचलित रहा है। इस काल के द्वौरान योग परम्परा का मुख्य ऐतिहासिक स्रोत वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों और पुराणों में प्राप्त होता है। सन् ५०० से ८०० ई. तक का समय योग के इतिहास और विकास का सर्वश्रेष्ठ काल है। इस अवधि के द्वौरान योग का विकास योगसूत्रों पर व्यासभाष्य और भगवद्गीता (ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग) के माध्यम से हुआ है। सन् ८०० से १७०० ई. तक का समय योग के व्यवस्थित होने का समय है। इस समय योग को शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और माधवचार्य आदि ने लोकप्रिय बनाया। सन् १७० से १९०० ई. तक योग का आधुनिक काल स्वीकार किया जाता है जिसमें महान योगाचार्य रमण महर्षि, रामकृष्ण परमहंस, परमहंस योगानंद, विवेकानंद आदि ने राजयोग के विकास में योगदान किया है। यह विकास क्रम विभिन्न दर्शनों, गुरु-शिष्य परम्पराएँ, योग की शैलियों के उद्भव का मार्ग प्रशस्त करतीहै।[38]

योग शब्द "युज् धातु" में "घय् प्रत्यय" लगाने से निषपन्न होता है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार युज् धातु के तीन अर्थों में पाया जाता है-

१. 'युज्-समाधौ' धातु दिवादिगणीय (*आत्मनेपदी*)। युज् धातु का अर्थ- समाधि।

२. 'युजिर्-योगे' धातु रुधादिगणीय (*उभयपदी*)। युजिर् धातु का अर्थ- संयोग।

३. 'युज्-संयमने' धातु चुरादिगण (*परस्मैपदी*)। युज् धातु का अर्थ- संयमन।

योगशास्त्र में योग शब्द का अर्थ समाधि अर्थात् चित्तवृत्ति का निरोध स्वीकार किया गया है-

योग: समाधि: स च सार्वभौम: चित्तस्य धर्म:। यो.सू. १।१

योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:। यो.सू. १।२

चित्तवृत्तिनिरोध रूपी समाधि के अर्थ में ही पातञ्जल योग का ग्रहण करना चाहिए। यह योग शब्द अन्य अर्थों में नहीं स्वीकार किया जा सकता, क्योंकि पातञ्जल योग प्रवृत्तिपरक न

---

[37] बृहदारण्यकोपनिषद् ४।३।१०

[38] Retrieved From: http://www.yogamdniy.nic.in/WriteReadData/LINKS/File577a4a83f0b-996b-4119-842d-60790971e651.pdf

होकर निवृत्तिपरक ही है अर्थात् कैवल्य देने वाला है। वह दु:ख की निवृत्ति कराने वाला है, जैसा कि गीता में कहा गया है-

दु:खसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्।[39]

पतञ्जलि मुनि के द्वारा अनुशासित योग के इसी स्वरूप का सादर निर्वचन करते हुए भोजराज ने कहा है-

पतञ्जलिमुनेरुक्ति: काप्यपूर्वा जयत्यसौ। पुंप्रकृत्योर्वियोगोऽपि योग इत्युदितो यया॥[40]

1.4. योग के प्रकार

भगवद्गीता में ज्ञान, कर्म और भक्ति योग का उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त योग धारणा-ध्यान-समाधि है (*ध्यानयोग*), योग स्थितप्रज्ञ की द्वन्द्वातीत ब्राह्मी स्थिति है (*ज्ञानयोग*), योग निष्काम कर्मयोग है, कर्मकौशल अर्थात् कामना रहित कर्म है (*कर्मयोग*) ।[41] योगराजोपनिषद् में मन्त्रयोग, लययोग, हठयोग और राजयोग का वर्णन किया गया है।[42] वराहोपनिषद् में लययोग, मन्त्रयोग और हठयोग की चर्चा प्राप्त होती है। योगशिखोपनिषद् में मत्रयोग, लययोग, राजयोग और हठयोग इन चार प्रकार के महायोगों का उल्लेख प्राप्त होता है।[43]

1.4.1. ज्ञानयोग

भगवद्गीता मोक्ष प्राप्त करने के लिए दो प्रकार के ज्ञान को स्वीकार करती है। तार्किक ज्ञान में (*विज्ञान*) वस्तुओं के बाह्य रूप को देखकर उनके स्वरूप की चर्चा बुद्धि के की जाती है। आध्यात्मिक ज्ञान (*ज्ञान*) वस्तुओं के आभास में व्याप्त सत्यता का निरूपण करने का प्रयास करता है। ज्ञान कैवल्य अर्थात् मोक्ष का हेतु कहा गया है। इसी ज्ञान की उपलब्धि मानव-जीवन की सार्थकता है- ज्ञानादेव तु कैवल्यम्।

---

39 श्रीमद्.गी.६।२३

40 रा.मा.वृ.पृ.सं.१

41 भारतीय दर्शन : आलोचना और अनुशीलन.पृ.सं.१७

42 योगराजोपनिषद् १,२

43 योगशिखोपनिषद् १२९

गीता में कहा गया है कि जब मनुष्य के मन-बुद्धि पर सात्विक ज्ञान का प्रभाव पड़ता है तब दैहिक स्वभाव पर भी सम्बुद्धि स्वरूप परिणाम प्रतिबिम्बित होने लगता है अर्थात् विनम्रता, दम्भहीनता, अहिंसा, सहिष्णुता, सरलता, गुरुसेवा, पवित्रता, स्थिरता, आत्मसंयम, इन्द्रियतृप्ति के विषयों और अहंभावना के त्याग, जन्म, मृत्यु, जरा और रोगजन्य दोषों की अनुभूति, वैराग्य, सत्य की खोज जैसे गुणों को श्रीकृष्ण ने मोक्षप्राप्ति का साधन ज्ञान कहा है।[44]

1.4.2. कर्मयोग

गीता का मुख्य विषय कर्म-योग कहा गया है। कर्म का अर्थ आचरण है। उचित कर्म से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। गीता में निष्काम-कर्म को, अपने जीवन को आदर्श बनाने का निर्देश किया गया है। निष्काम कर्मयोग के दो लक्ष्य हैं- आत्मलाभ और ईश्वरप्राप्ति। निष्काम कर्म-योग का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि निष्काम कर्म-योगी परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।[45] प्रत्येक कर्म के पाँच कारण होते हैं अर्चस् (*शरीर*), कर्त्ता, इन्द्रियाँ, चेष्टायें तथा परमात्मा।[46] मनुष्य विभिन्न तत्त्वों का एक समेकित आकार है। यही कारण है कि मनुष्य इन एक क्षण भी के लिए भी निष्क्रिय नहीं रह सकता है और कर्म करना मनुष्य की विवशता है।[47]

1.4.3. भक्तियोग

गीता-ज्ञान का सार भक्ति है। भक्ति का अर्थ उपासना है। उपासना का अर्थ है भगवान् का निरन्तर स्मरण। गीता में बार-बार भक्ति और ज्ञान की एकता प्रतिपादित की गई है। गीता का अनन्य भक्ति पर बहुत आग्रह है। अनन्य भक्ति से ही भगवत्स्वरूप का ज्ञान और

---

[44] श्रीमद्.गी.१३।७-११

[45] योग युक्त: बह्म नचिरेण अधि गच्छति। श्रीमद्.गी ५।६

[46] अधिष्ठानं तथा कर्त्ता कारणञ्च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥ श्रीमद्.गी १८।१४

[47] न हि कश्चित क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवश: कर्म सर्व: प्रकृतिजैर्गुण:॥ श्रीमद्.गी ३।५

भगवत्प्राप्ति तथा भगवान् से तादात्म्य सम्भव है। ज्ञानी को भगवान् ने अनन्य भक्त (*एकभक्ति:*) और आत्म-स्वरूप (*आत्मैव*) बताया है।[48]

भक्ति को राजविद्या और राजगुह्ययोग बताकर शरणागति (*मत्परायण:*) की महिमा प्रतिष्ठित की गयी है। समस्त गुह्य ज्ञान की और इस राजविद्या की पराकाष्ठा भक्तियोग है।[49] शास्त्रों और पुराणों में भी भक्ति का निरूपण किया गया है। तदनुसार परमात्मा का स्मरण, चरण-सेवन, पूजन, वन्दन, श्रवण, कीर्त्तन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन- ये भक्ति नवधा के प्रकार है।[50]

1.4.4. मन्त्रयोग

ईश्वर अथवा किसी पवित्र भावना के लिए शब्द रूपी प्रतीक चिह्न बनाया गया है, शब्द के स्मरण मात्र से ही चित्त की वृत्ति का निरोध करने को मन्त्रयोग कहते हैं।[51] संयुक्त रूप से ब्रह्म या आत्मा मैं ही हूँ इस प्रकार की प्रतीति होना या ब्रह्म से साक्षात्कार की अनुभूति का नाम मन्त्रयोग है। हंस (*सोऽहम्*) मन्त्र का रहस्य बताते हुए योगचूड़ामणि[52] में कहा गया है कि मन्त्रयोग के संकल्प मात्र से सभी पापों से निवृत्ति मिल जाती है। योगतत्त्वोपनिषद् में मन्त्रों के विषय में इस प्रकार का उल्लेख है-

मातृकादियुतं मन्त्रं द्वादशाब्दं तु यो जयेत्।

क्रमेण लभते ज्ञानमणिमादिगुणान्वितम्॥[53]

भगवद्गीता में कृष्ण कहते हैं कि-

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।

शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा॥

---

[48] श्रीमद्.गी. ९।२२

[49] राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्। प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्त्तुमव्ययम्॥ श्रीमद्.गी ९।२

[50] श्रवणं कीर्तनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम्। अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यं आत्मनिवेदम्॥ श्रीमद्.गी ७।५।२३

[51] योग दिवाकर, पृ.सं.३००

[52] हरकारेण बहिर्याति.....न भूतं न भविष्यति॥यो.चू.३१-३४

[53] योगतत्त्वोपनिषद्, २१-२२

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।

ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप॥[54]

मन्त्रयोग के विविध उपांग इस प्रकार हैं- नवधा भक्ति, शुद्धि, आसन, पंचांग सेवन, आचार, धारणा, दिव्यदेय सेवन, पानक्रिया, मुद्रा, तर्पण, हवन, बलि, याग, जपयाग, ध्यान, समाधि आदि।[55]

1.4.5. लययोग

योगशिखोपनिषत् के अनुसार हठयोग के द्वारा जब सभी दोषों का शमन हो जाये एवं जीवात्मा एवं परमात्मा के ऐक्य की अनुभूति हो और चित्त ब्रह्म में विलीन हो जाए तो इसे ही लययोग (*नादयोग*) कहा गया है। लय की अवस्था को आत्मानान्द के सुख की स्थिति भी कहा गया है।[56] नादानुसंधान से लययोग किया जा सकता है अर्थात् आसन, कुम्भक, मुद्रा ये हठयोग के उपाय हैं और नादानुसंधान शाम्भवी आदि मुद्राएँ लय योग सिद्ध करने के उपाय हैं अर्थात् लययोग हठयोग की संयम कला है।[57]

1.4.6. हठयोग

हठयोग का सम्बन्ध शरीर और प्राण से है। यम, नियम, आसन, कुम्भक प्राणायाम और अनेक मुद्राएँ- ये पाँच हठयोग साधन के प्रधान अंग हैं। इस प्रकार के आसन से शरीर स्थिर तथा सुखकारक होने पर कुम्भक करके प्राण को नियम में लाकर उसे सुषुम्णा मार्गवाही करके षड्चक्रों का भेद करके बह्मरन्ध्र में ले जाकर वही प्राण का लय कराना ही योग कहलाता है। इस तरह प्राण का लय होने से मन का अपने आप लय हो जाता है। हठयोग में आसन, कुम्भक और मुदाओं का मुख्य उद्देश्य है कि शरीर को दृढ करना।[58]

---

[54] श्रीमद्.गी.११।५३-५४

[55] मन्त्रयोग के अंग, योगांग का ध्यान,पृ. ३३५-३९ एवं योगतत्त्वमीमांसा, वहीं, पृ.१५५-१५६

[56] लययोगश्चित्तलय: कोटिश: परिकीर्तित:।
गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन् भुञ्जन् ध्यायेन्निष्कलमीश्वरम्॥
स एव लययोग: स्यात्.....॥ यो.त.उप, २३-२४

[57] यो.दि.पृ.सं.३०२

[58] यो.दि.पृ.सं.२९९-३००

ह का अर्थ सूर्य (*पिङ्गला नाडी*), ठ का अर्थ चन्द्रमा (*इडा नाडी*), हकार और ठकार का योग अर्थात् सूर्य (*प्राणवायु*) और चन्द्रमा (*अपानवायु*) के मिलने को हठयोग कहते हैं। यथा-

हकारेण तु सूर्य: स्यात् सकारेणेन्दुरुच्यते।

सूर्याचन्दमसोरैक्यं हठ इत्यभिधीयते॥

हठेन ग्रस्यते जाड्यं सर्वदीपसमुद्भवम्॥

क्षेत्रज्ञ: परमात्मा च तयोरैक्यं तदाभवेत्॥[59]

हठयोग की साधना में सात अंग है जिनको सप्तांग भी कहा जाता है। उनमें षट्कर्मों द्वारा शरीर की शुद्धि करके, आसनों से दृढता, मुद्रा से स्थिरता, प्रत्याहार से धीरता, प्राणायाम से लघुता, ध्यान से आत्म साक्षात्कार और समाधि से निर्लिप्तता को प्राप्त साधक को मोक्ष अवश्य प्राप्त होता है।

1.4.7. राजयोग

यह राजयोग सर्व संसार समुद्र को तारने वाला है अत: उसे तारक राजयोग भी कहते हैं। उसके पूर्व और उत्तर दो विभाग हैं। पूर्वभाग तारक और उत्तरभाग राजयोग कहलाता है। आत्मनिष्ठा, ब्रह्मनिष्ठा, राजविद्या, राजगुह्य, महायोग, अस्पर्शयोग, सांख्ययोग, अध्यात्मयोग, ज्ञानयोग, राजाधिराजयोग आदि अनेक नाम राजयोग के लिए प्रयुक्त हैं। नित्यानित्य वस्तुविवेक, इहामुत्रार्थभोगविराग, षट्सम्पदा, मुमुक्षा, श्रवण, मनन, निदिध्यासन, तत्पदार्थ एवं त्वंपदार्थ शोधन विधि-अष्टांगिक राजयोग है।[60]

योगषिखोपनिषद् में राजयोग का स्वरूप इस प्रकार है-

---

[59] पा.यो.प्र. पृ.सं १७४

[60] समग्र योग.पृ.सं.४०-४१

योनिमध्ये महाक्षेत्रे जपाबन्धूकसंनिभम्। योगषिखोपनिषद्।[61]

"रजसो रेजसो योग राजयोग:" यहाँ रजस् एवं तेजस् का स्वरूप सदैव ही पारिभाषिक है।

रजसो रेतसो योगात् शक्तिशिवयोगाद् राजयोग:।[62]

जो मन एवं प्राण दोनों को ही आत्मा में लीन कर लेता है, वो (*राजयोगी*) सबसे श्रेष्ठ योगी होता है। बोधसार में कहा गया है-

मन: प्राणद्वययुजस्ते तु श्रेष्ठतरा: स्मृता:।[63]

इस प्रकार श्रद्धाभक्ति के साथ निष्काम भाव से आचरण ही कर्मयोग है, वही भक्तियोग है, वही ज्ञानयोग है,[64] वही मोक्ष सन्यास योग है। चतुर्थ अध्याय में प्रतिपादित अव्ययोग ही राजविद्या है। इसमें कर्मयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग की त्रिवेणी एकाकार हो जाती है।

1.5. पातञ्जलयोगशास्त्र की परवर्ती रचनाएँ

1.5.1. व्यासमुनिकृत, व्यासभाष्य

योगसूत्रकार पतञ्जलि के विवरण में भाष्यकार व्यास का पर्याप्त उल्लेख हुआ है। सारांश केवल इतना है, कि महाभारत तथा ब्रह्मसूत्रों के रचयिता कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ही योगसूत्रों के भाष्यकार[65] है।

अध्येताओं की दृष्टि में योगसूत्रों की भाँति योगभाष्य भी अतीव महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक कृति है। योगदर्शन का शास्त्रीय तथा व्यावहारिक-उभयविध स्वरूप योगभाष्य में

---

[61] योगशिखोपनिषद्, १.१३६

[62] यो.शि.उप.१.१३

[63] सम.ग. पृ.सं.४१

[64] श्रीमद्.गी.५।४

[65] दण्डी संन्यासी वर्ग के एकाधिक महानुभावों के साथ प्रासंगिक चर्चा में ऐसा ज्ञात हुआ, कि उनके सम्प्रदाय में योगसूत्रभाष्यकार व्यास को गगरिया व्यास कहा जाता है। सम्भवत: इसका आधार यही रहा हो, कि उस वर्ग में योगसूत्रभाष्यकार व्यास ज्ञाननिधि दृष्टि से गागर के समान और ब्रह्मसूत्रकार व्यास सागर के समान समझे जाते हों। पातञ्जल-योगदर्शनम्.पृ.सं.४३

प्रदर्शित किया गया है। इस भाष्य की प्रसिद्धि योगभाष्य, व्यासभाष्य, पातञ्जलभाष्य, और सांख्यप्रवचनभाष्य आदि नामों से भी है। विज्ञानभिक्षु कहते हैं-

सर्ववेदार्थसारोऽत्र वेदव्यासेन भाषित:।

योगभाष्यमिषेणातो मुमुक्षूणामिदं गति:॥

गङ्गाद्या: सरितो यद्वदब्धेरंशेषु संस्थिता:।

सांख्यादिदर्शनान्येवमस्यैवांशेषु कृत्श्नश:॥[66]

यद्यपि भाष्य की पुष्पिकाओं में कहीं पर भी व्यास का नामोल्लेख नहीं है, फिर भी तत्त्ववैशारदीकार वाचस्पति मिश्र अपनी टीका के आरम्भ में इस भाष्य को वेदव्यास-भाषित कहते हैं। भास्वतीकार हरिहरानन्द आरण्यक भी ग्रन्थारम्भ में "तं भाष्यकृद् व्यासमुनिं नमामि" और "रत्नाकर: प्रवादानां भाष्यं व्यासविनिर्मितम्" कहते हैं।[67]

1.5.2. वाचपतिमिश्र कृत तत्त्ववैशारदी

व्यासभाष्य पर वाचस्पतिमिश्र की तत्त्ववैशारदी टीका प्रसिद्ध रचना है। वाचस्पतिमिश्र का समय सर्वथा निश्चित है। वाचस्पति मिश्र ने न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका की समाप्ति पर गौतम के मूल न्यायसूत्रों का सम्पादन करके उन्हे "न्यायसूचीनिबन्ध" नाम से उल्लेख किया है।[68] वाचस्पति मिश्र का काल उनके अपने निर्देशानुसार ८९८ विक्रमी संवत है[69], जो ८४१ई. सन् के समान है।

भाषा, भाव और सहज-संगत-उत्थानिका- सभी दृष्टियों से तत्त्ववैशारदी का महत्त्व सर्वातिशायी है। उनकी भाषा भगवान् भाष्यकार शङ्कर की भाषा की छवि से मण्डित प्रतीत होती है-

---

[66] यो.वा.३

[67] पातञ्जलयोगदर्शनम्- सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव पृ.स. २२

[68] सांख्यदर्शन का इतिहास. पृ.सं.४१३

[69] न्यायसूचीनिबन्ध के अन्त में वाचस्पति मिश्र ने अपना प्रस्तुत ग्रन्थ का लेखन काल इस प्रकार बताया है-
न्यायसूचीनिबन्धोऽसावकारि सुधियां मुदे।
श्रीवाचस्पतिमिश्रेण वस्वङ्कवसुवत्सरे॥ पातञ्जल-योगदर्शनम्.पृ.सं.४९

"न खलु न्यग्रोधधाना अह्नायैव न्यग्रोधशाखिनं सान्द्रं शाद्वलदलजटिलंशाखाकाण्डनिपीतमार्तण्डचण्डातपमण्डलमारभन्ते, किन्तु क्षितिसलिलतेज: सम्पर्कात् परम्परोपजायमानाङ्.कुरपत्रकाण्डतालादिक्रमेण, एवमिहापि युक्त्यागमसिद्ध: क्रमश्चास्थेय इति।"[70]

1.5.3. विज्ञानभिक्षुकृत योगवार्तिक

योगवार्तिक एक विशाल तथा विस्तृत व्याख्या ग्रन्थ है। योगसूत्रभाष्य के रहस्यों को पूरे परिप्रेक्ष्य में समझने और योग के सर्वाभिवन्द्य महात्म्य का यथातथ्य आकलन करने के लिये योगवार्तिक का अध्ययन अपरिहार्य है। विज्ञानभिक्षु का समय आधुनिक विद्वानों ने सोलहवीं सदी के अन्तिम भाग में १५५० ई.के लगभग स्वीकार किया है[71] डा. कीथ[72] विज्ञानभिक्षु का समय १५५० ईसवी बताते हैं।

1.5.4. भोजराजकृत राजमार्तण्डवृत्ति

भोजराज की योगसूत्रों पर राजमार्तण्ड नामक वृत्ति अत्यन्त उपयोगी व्याख्या है। इसकी भाषा प्राञ्जल, विषय विवेचन सन्तुलित, एवं मूलसूत्रार्थ की स्पष्ट अभिव्यक्ति तक सीमित है। उदाहरण-

"नामूलं लिख्यते किञ्चिन्नानपेक्षितमुच्यते"।[73]

भोजराज का समय आधुनिक विद्वानों ने ग्यारहवीं सदी में बताया है। भोजराज ने वृत्ति के प्रारम्भ में अपनी रचनाओं का संकेत करते हुए कहा है कि शब्दानुशासन, पातञ्जल योगसूत्रों पर राजमार्तण्ड नामक वृत्ति, तथा आयुर्वेद विषय का राजमृगांक नामक ग्रन्थ उनकी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ है-

शब्दानामनुशासनं विवधता पातञ्जले कुर्वता वृत्ति, राजमृगाड्.संज्ञकमपि व्यातन्वता वैद्यके।[74]

---

[70] त. वै. पृ.सं.२११

[71] Preface to the Samkhyasara, P. 37

[72] History of Sanskrit Literature p.489

[73] पातञ्जल-योगदर्शनम्.पृ.सं.४६

[74] पा.यो.पृ.सं.४५

1.5.6. शंकराचार्यकृत पातञ्जलयोगसूत्रभाष्यविवरण

पातञ्जलयोगसूत्रभाष्यविवरण के लेखक का नाम मुद्रित पुस्तक की पुष्पिका में इस प्रकार लिखा है-

इति श्रीगोविन्दभग्वत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंसपरि-

व्राजकाचार्यस्य श्री शंकरभगवत: कृतौ

श्री पातञ्जलयोग (शास्त्र) सूत्रभाष्यविवरणे

प्रथम: समाधिपाद:।

चारों पादों के अन्त में पादविशेषनिर्देश के साथ पुष्पिका का अविकलरूप यही है। ग्रन्थ के आरम्भ का निर्देश भी द्रष्टव्य है-

श्री:

श्री पातञ्जलये नम्:

श्री वेदव्यासाय: नम:

श्रीमच्छङ्.करभगवत्पादेभ्यो नम:

॥ पातञ्जलयोगसूत्रभाष्यविवरणम् ॥

॥ श्रीमच्छङ्.करभगवत्पादप्रणीतम् ॥

पुष्पिका आदि के इन निर्देशों के आधार पर कतिपय बुद्धिजीवी व्यक्ति कहते हैं कि यह विवरण आदि शंकराचार्य की रचना है। शंकरभगवत्पाद का प्रयोग प्राय: उन्हीं के लिये होता आया है। उनके गुरु का नाम भी ठीक उसी रूप में निर्दिष्ट है- गोविन्दभगवत्पूज्यपाद।[75]

[75] पा.यो.पृ.सं.५०

1.5.7. अन्य कृतियाँ

योगसूत्रों पर विज्ञानभिक्षु के शिष्य भावागणेश (*१७वीं शताब्दी*) की "वृत्ति" तथा प्रसिद्ध वैयाकरण नागोजी भट्ट (*१७वीं शताब्दी*) की "छाया" नाम की कृति महत्त्वपूर्ण है। रामानन्द यति (*१८वीं शताब्दी*) की "मणिप्रभा" और नारायणतीर्थ (*१८वीं शताब्दी*) की "सूत्रार्थावोधिनी", "योगसिन्द्धान्तचन्द्रिका" तथा "योगदर्शन" नाम की व्याख्याएँ भी प्रसिद्ध हैं। हरिहरानन्द आरण्यक की "भास्वती" टीका भी विश्वशनीय एवम् उपादेय है। सदाशिवेन्द्रसरस्वती की "योगसुधाकर", और अनन्तदेव की "पदचन्द्रिका" टीका भी प्रमुख हैं।

1.6. पातञ्जल योगदर्शन : विषय एवं संरचना

योगदर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय प्रकृति-पुरुषविवेकख्याति के उपायों का विवरण प्रस्तुत करना है। उसमें ईश्वर के अस्तित्व का उपयोग जितना अपेक्षित है, ईश्वरविषय के विवरण में उतना ही उल्लेख योगदर्शन करता है। समाधिसिद्धि के लिये ईश्वर के वाचक पद "प्रणव" के जप का ही मुख्यरूप से प्रतिपादन हुआ है। इसकी प्रासंगिकता में भी संकेत उन योगसूत्रों[76] में उपलब्ध हैं। योग के उपायभूत आठ अंगों में नियम के पाँच अवयवों में अन्तिम ईश्वर-प्रणिधान ही है।

समाधि की मूर्धन्य अवस्था प्राप्त करने के लिये सर्वश्रेष्ठ एवं प्रधान उपायों के रूप में परवैराग्य और ईश्वरप्रणिधान दो को ही स्वीकार किया गया है। परवैराग्य सांसारिक आकर्षणों से आत्मा को दूर करता है, और ईश्वर-प्रणिधान परमात्मा के साथ जोड़ता है; यही जीवन का परम लक्ष्य है। योगदर्शन में प्रसंगानुसार[77] ईश्वर-प्रणिधान का निर्देश योगसिद्धि के साधन के रूप में उसके महत्त्व को प्रकट करता है।

1.7. योगदर्शन की तत्त्वमीमांसा

1.7.1. परिणामसिद्धान्त

अनादि अविद्या के कारण जब पुरुष का प्रकृति से संयोग होता है, तब संयोग के कारण अभिव्यक्त हुई उसकी बुद्धि क्रमश: अहंकार, एकादश इन्द्रियों, पाँच तन्मात्राओं एवं

---

[76] यो.सू.१।१३-२८

[77] यो.सू.१।१७, २।१-२३-४५

पाँच महाभूतों फिर संसार के विभिन्न पदार्थों के रूप में परिणत होती है। पञ्चमहाभूतों पर्यन्त प्रकृति का परिणाम तत्त्वान्तरपरिणाम कहा जाता है।[78] परिणामवाद का अर्थ है कि समस्त भूत और भौतिक जगत् के प्रत्येक क्षण परिवर्तनशील है। समस्त भूतों में और इन्द्रियों में यह परिणाम तीन रूपों में दिखाई देता है- धर्म, लक्षण और परिणाम।[79]

1.7.2. ईश्वर

योगशास्त्र में ईश्वर नामक तत्त्व भी स्वीकृत है इसलिये विद्वानों ने योगदर्शन को सेश्वरसांख्य भी कहा है। पतञ्जलि ने ईश्वर[80] का वर्णन इन सूत्रों में किया है।[81] ईश्वर की विशेषता यह है कि उसमें क्लेशादि का परामर्श या व्यपदेश भी नहीं होता। उसकी सन्निधि में प्रकृष्टसत्त्व रहता है, जिससे वह प्रणिधान-परायणजीवों के उद्धार के लिये संकल्प करता है।[82]

ईश्वर का ऐश्वर्य सर्वातिशायी है। उसी में सर्वज्ञता की पराकाष्ठा होती है। वह कालातीत है। उसका वाचक शब्द प्रणव अर्थात् ओड्कार है। योग-साधना में ईश्वर का महत्त्वपूर्ण उपयोग यह है कि उसकी भावना करने और उसके नाम का जप करने से योगमार्ग के सारे विघ्न दूर हो जाते हैं तथा साधक को अपने स्वरूप का दर्शन होता है। अन्तत: साधक को कैवल्य की सिद्धि होती है।[83]

1.7.3. कर्मसिद्धान्त

योगशास्त्र में कर्मसिद्धान्तों पर विधिवत् विचार प्रस्तुत किया गया है। कर्मों के फल वर्तमान जीवन और भविष्यज्जीवनों में भोगे जाने योग्य होते हैं।[84] जीवों में क्लेश की सत्ता रहने पर ही इन कर्म-फलों की प्राप्ति आरम्भ हो सकता है।[85] जन्म, आयु और भोग- यही तीन मुख्य फल या विपाक हैं, जो कर्मसंस्कारों से प्राप्त होते हैं। ऐसे कर्मसंस्कार, जो तीनों फल देते हैं त्रिविपाककर्माशय कहलाते हैं। ये सभी प्रकार के कर्मसंस्कार शुभ होने पर आनन्ददायक फल और अशुभ होने पर दु:खमय फल देते हैं।

---

78 न विशेषेभ्य: परं..... व्याख्यायन्ते। यो.सू. २।१९

79 एतेन भूतेन्द्रियेषु धर्मलक्षणावस्थापरिणाम व्याख्यात:। यो.सू. ३।१३

80 क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्ट: पुरुषविशेष: ईश्वर:। यो.सू. १।२४

81 यो.सू.१।२५-२६-२७-२८-२९

82 यो.सू.१।२३

83 पा.यो.पृ.सं.४०

84 क्लेशमूल: कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीय:। यो.सू.२।१२

85 सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा। यो.सू.२।१३

1.7.4. विवेकख्यातिवाद

सांख्य और योग का ज्ञान विवेकख्याति नाम से प्रसिद्ध है। योग दर्शन चतुर्व्यूहात्मक हैं, योग दर्शन के चार व्यूह हैं- हेय, हेय-हेतु, हान और हानोपाय। अनागत दु:ख हेय है।[86] दृष्टा और दृश्य का संयोग हेय-हेतु है।[87] कैवल्य का नाम हान है[88] और विवेकख्याति हानोपाय है।[89] समस्त योगाभ्यास और समाधि के साधन इसी विवेकख्याति को प्राप्त करने के लिये आचरित किये जाते है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने चतुर्व्यूहात्मक में इसी विवेकख्याति को दु:ख निवृत्ति का उपाय बताया है।

1.7.5. कैवल्य

पतञ्जलि ने योगसूत्र के चारों पादों में कैवल्य का विवेचन किया है। वस्तुत: समाधिपाद में कैवल्य और उसकी प्राप्ति के साधनभूत योग का सम्बन्ध बताया गया है।[90] साधनपाद में बताया गया है कि सम्प्रज्ञातलभ्य विवेकख्याति के द्वारा अविद्या की निवृत्ति हो जाने पर अनादि अविद्याकृत पुरुषप्रकृतिसंयोग का अभाव हो जाता है।[91] विभूतिपाद में कैवल्य के लिये उपयुक्त स्थिति का निरूपण किया गया है। बुद्धिसत्त्व की समानरूप से शुद्धि हो जाने पर कैवल्य सिद्ध हो जाता है।[92] बुद्धि-सत्त्व से अभिसम्बन्धन्धित होने की सम्भावना से निवृत्ति हो जाना, पुरुष का सदा एकाकी, केवल, निरुपाधि रूप से रहना ही कैवल्य है।[93]

पातञ्जल योगदर्शन में चार पाद और १९५ सूत्र हैं। योगदर्शन के प्रत्येक पाद का नाम उसके प्रतिपाद्य विषय के आधार पर दिया गया है। इससे प्रकरण-पूर्वक सम्पूर्ण शास्त्र को समझने में सुविधा रहती है। योगदर्शन में चार पाद इस प्रकार है-

- प्रथम पाद- समाधिपाद (*५१ सूत्र*)
- द्वितीय पाद- साधनपाद (*५५ सूत्र*)

---

[86] हेयं दु:खमनागतम॥ यो.सू. २।१६

[87] दृष्ट्रदृश्ययो: संयोगो हेयहेतु:। यो.सू. २।१७

[88] तदभावात् संयोगभावो हानं तद् दृशे कैवल्यम्। यो.सू.२।२०

[89] विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपाय:। यो.सू. २।२६

[90] यो.सू.१।३

[91] यो.सू.२।२५

[92] यो.सू.३।५५

[93] यो.सू.४।३४

- तृतीय पाद- विभूतिपाद (*५५ सूत्र*)
- और चतुर्थ पाद- कैवल्यपाद (*३४ सूत्र*)

1.8. योग की प्राचीनता

योग अत्यन्त व्यापक विषय है। वैदिक परम्परा में वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, आरण्यक, भगवद् गीता, रामायण, महाभारत, पुराणों में भी योग विद्या का उल्लेख प्राप्त होता है। वस्तुत: पातञ्जल योगसूत्र से योग विद्या का निश्चित और अनुशासित आधार निर्मित हुआ है। यह पूर्णरूप से ज्ञानविज्ञान पर आधारित है। योगसिद्धान्तचन्द्रिका के रचयिता नारायणतीर्थ ने योग को क्रियायोग, चर्यायोग, कर्मयोग, हठयोग, मन्त्रयोग, ज्ञानयोग, अद्वैतयोग, लक्ष्ययोग, ब्रह्मयोग, शिवयोग, सिद्धयोग, लययोग, ध्यानयोग, तथा प्रेमभक्ति द्वारा साध्य स्वीकारा है। अनेक योगों से ध्रुवीकृत योग अर्थात् समाधि उन्होने को राजयोग नाम से अभिहित किया है।[94] योग शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख **ऋग्वेद**[95], **यजुर्वेद**[96], **सामवेद**[97] और **अथर्ववेद**[98] में हुआ है। इनमें से कुछ स्थलों पर व्यवहृत योग शब्द निश्चित रूप से योग-साधना का अर्थ देता है। वैदिक काल में योग का प्रयोग देवोपासना के लिये होता था। इन मन्त्रों में आये हुये योगम्, योगे और योगे-योगे पद निश्चित ही चित्त की किसी न किसी प्रकार की एकाग्रता का ही बोध कराते हैं।

योग की विविध इन्द्रधनुषी छटा वैदिक ऋचाओं, ब्राह्मणों एवम् आरण्यकों में देखने को मिलती है। तैत्तिरीय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों ने यौगिक परम्परा को आगे बढ़ाया है। तैत्तरीय ब्राह्मण औषधि, पर्जन्य और मन के साथ ही ध्यान और योग का वर्णन भी करता है।[99]

---

[94] निदिध्यासनश्चैकतानतादिरूपो..... प्रेमभक्तियोगाश्च। योगसिद्धान्तचन्द्रिका पृ.सं.२

[95] यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति॥ ऋक्संहिता, मं-१, सूक्त-१८, मंत्र-७

[96] युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितु: सवे। स्वर्ग्यपाय शक्त्या॥ यजु. सं.११।२

[97] स घा नो योग आभुवत् स राये स पुरंध्याम्। गमद् वाजेभिरा स न:॥ ऋ.सं. १।५।३, साम.सं उ. १।२।१०।३, अथर्ववेद २०।६९।९

[98] योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये॥
ऋ.सं.१/३०/७,शु.यजु.का.सं.अ.१/१४,सा.सं.पूर्वा.२/२/७/९, अथर्व. २०/२६/१

[99] तैत्तरीय.ब्रा.३।१०।८।१६-२२

ब्राह्मणों के अनन्तर आरण्यकों में भी पतञ्जलि के पहले ही षडंग योग का वर्णन प्राप्त होता है। (*मैत्रायणि आरण्यक ६।१८*) आरण्यक ग्रन्थों में प्राणायाम का भी विवेचन प्राप्त होता है। यह प्राण शरीर में अध्यात्मरूप में रहता है-

आदित्यो वै बाह्य प्राण उदयत्येष ह्येनं चाक्षुषं प्राणमनुगृह्णीते।[100]

यह प्राण आदित्यरूप से मुख्य तथा आवन्तर दिशाओं को व्याप्त कर वर्तमान है और सब भुवनों के मध्य में बारंबार आकर निवास करता है। इस मन्त्र का सार है-

सर्वं हीदं प्राणेनावृतम्।[101]

उपनिषदों में योग को अध्यात्म योग कहा गया है। काठकोपनिषद् में आत्मज्ञान के एकमात्र साधन के रूप में योग को स्वीकार किया गया है। श्वेताश्वतर उपनिषद् में कहा गया है कि ऐसे स्थान पर योग का अभ्यास करे जो समतल है।[102] अध्यात्मयोगाधिगम के द्वारा धीर पुरुष हर्ष और शोक को त्याग देता है -

अध्यात्मयोगाधिगमे देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति।[103]

रामायण में योग विश्वामित्र, भारद्वाज, वशिष्ठ, अत्रि और शतानन्द ऋषियों की साधना में वर्णित हुआ है। विश्वामित्र ने यौगिक प्रक्रिया से राम को विद्या दान दिया था।[104] भारद्वाज का वर्णन एक समाधिस्थ योगी और ध्यानी महात्मा के रूप में किया गया है। उनका आश्रम योगियों का महास्थान है।[105] दण्डकारण्य में वानप्रस्थियों और सुतीक्ष्ण मुनि के योग में लीन होने वर्णन है।[106] इस प्रकार रामायण में तपयोग, हठयोग, ध्यानयोग और पुरुषोत्तमयोग का वर्णन प्राप्त होता है।[107]

महाभारत में योग यज्ञ, तप और धर्म तीनों रूपों में वर्णित है। भीष्म का कथन है कि हजार अश्वमेघ यज्ञ और सौ वाजपेय यज्ञ के बराबर योग का फल होता है।[108] योग के महत्त्व

---

100 प्रश्नोपनिषद्, १।१७

101 ऐत.आ.पृ.सं.१०८(आनन्दाश्रम संस्करण)

102 श्वे.उप.१०

103 कठोप.१।२।१२

104 रामा.१।२७।२-२७

105 रामा.२।९१।२४-८३

106 रामा.३।६।२-५

107 रामा.३।७

108 अश्वमेघसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च। योगस्य कलया तात न तुल्यं विद्यते फलम्॥ महा.१२।३२४।९

को बताते हुए वे ध्यानयोग को सर्वश्रेष्ठ स्वीकार करते हैं। वे ध्यान द्वारा सुख और निर्वाण प्राप्त करने की बात करते हैं-

न तत् पुरुषकारेण न च दैवेन केनचित्।
सुखमेष्यति तत् तस्य यदेवं संयतात्मन:॥
सुखेन तेन संयुक्तो रंस्यतेध्यानकर्मणि।
गच्छन्ति योगिनो ह्येवं निर्वाणं तन्निरामयम्॥[109]

इस प्रकार महाभारत में ध्यानयोग, कर्मयोग और ज्ञानयोग तीनों का वर्णन है। गीता भी महाभारत का अगं है इसलिए उसमें वर्णित अनेक प्रकार के योग भी महाभारत के पूरक हैं।[110]

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रत्येक अध्याय को योग योग की संज्ञा दी गयी है। प्रथम छ: अध्याय में पाँच प्रकार की साधनाप्रणाली का वर्णन है। इन्हें कर्मयोग के अन्तर्गत रखा गया है। अगले छ: अध्याय में भगवान् के उपदेश है। इनमें भक्तियोग है। अन्त छ: अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण ने कुछ विशिष्ट एवं दुरुह सिद्धान्तों की मीमांसा की है, जिन्हें समझना योग को पूर्णत: व्यवहार में लाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यही ज्ञानयोग है।[111] गीता में योग के मुख्यत: तीन स्वरूप स्पष्ट दिखाई देते हैं-

समत्वं योग उच्यते।
योग: कर्मसु कौशलम्।
तं विद्याद्दु:खसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्।[112]

पुराणों में भी योग का वर्णन प्राप्त होता है। भागवत पुराण में भक्ति के साथ-साथ अष्टाङ्गयोग का प्रचुर वर्णन प्राप्त होता है। भागवत के तीन स्कन्धों में योग का विशेष विवरण दिया गया है- दूसरे स्कन्ध के अध्याय १ और २ में, तीसरे स्कन्ध के २५वें तथा २८वें अध्यायों में कपिल मुनि का अपनी माता देवहूति को योग का उपदेश और फिर अध्याय १४ में ध्यानयोग का वर्णन, अध्याय २८-२९ में यथाक्रम ज्ञानयोग और भक्तियोग का वर्णन प्राप्त होता है। वायुपुराण के १०वें, ७८-८२वें, ११वें खण्ड में प्राणायाम के

---

109 महा.१२।१९५।२१-२२

110 महा.१२।३०५।१९

111 सम.यो.पृ.सं.४८-४९

112 श्रीमद्.गी २।४८, २।५०, ६।२३

प्रयोजनों में क्रमश: शान्ति, दीप्ति और प्रसाद बताये गये हैं। वायुपुराण में योग की साधना से रुद्रलोक प्राप्ति का वर्णन किया गया है-

प्राप्य माहेश्वरं योगं रुद्रलोक व्रजन्ति ते।[113]

जैनयोग मन, वचन और शरीर की क्रियाओं से उत्पन्न आत्मप्रदेशों का कम्पन, जिससे कर्म पमाणुओं का बन्ध होता है, योग कहलाता है।[114] वस्तुत: जैनदर्शन का अयोग शब्द पातञ्जलयोग के योग शब्द से साम्य रखता है। यहाँ अयोग शब्द शरीर एवं वाणी के व्यापारों के निरोध के साथ मन के व्यापारों के निरोध को भी सूचित करता है। जैन-साधना के अर्थ में योग शब्द को प्रचलित करने का श्रेय आचार्य हरिभद्र को है।[115]

योग वैभाविक परिणमनों से या बाह्याभिमुखता से स्वाभाविक परिणमन या अन्तर्मुखता की ओर यात्रा है। जैन आगमों में मुनियों को आदेश है कि वे अव्याक्षिप्त चित्त से गोचरी न करें। यहाँ अव्याप्क्षिप्त पद में पातञ्जल योग में वर्णित क्षिप्त एवं विक्षिप्त दोनों अवस्थाओं का संकेत मिलता है। एकाग्रमन सन्निवेशन से चित्त का निरोध हो जाता है।[116]

पातञ्जल योग के यम एवं नियम प्राय: **बौद्ध योग** में भी समान ही हैं। मात्र ईश्वर-प्रणिधान का जो स्वरूप पातञ्जल योग में है, बौद्ध योग में वैसा नहीं है। तथापि "बुद्धं शरणं गच्छामि" कहकर शास्ता का ईश्वरीकरण प्रकारान्तर से कर दिया गया है, जिसका पल्लवन महायान सम्प्रदाय में होता है। इस प्रकार बौद्ध योग में भी शील के अन्तर्गत पञ्च महाव्रत, पञ्चशील एवं शौच, सन्तोष, तप, निष्काम कर्म आदि का विधान है। शीलसम्पन्न साधक ही बौद्ध योग में समाधि का अधिकारी होता है। बौद्ध योग में आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधि सभी समाधि के अन्तर्गत समाहित है। पातञ्जल योग का अष्टांग योग है। बौद्ध योग भी अष्टांगमार्गी है। कहीं-कहीं इसे षडंग भी स्वीकार किया है। इस प्रकार सम्पूर्ण भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रत्येक पक्ष योगविद्या से प्राचीनकाल से ही परिचित रहा है।

---

113 वा.पु.२३. १८४

114 तिविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा- मणजोए वहजोए, कायजोए-ठाणांगसूत्र, ३।१।१२४

115 सम.यो.पृ.सं.६६

116 एकग्गमणसंनिवेसणाएणं चित्तनिरोहं करेइ। उ.सू.२९।५

द्वितीय अध्याय

ऑनलाइन योगानुक्रमणिका बनाने की प्रक्रिया तथा डेटाबेस निर्माण

2.1. संस्कृत वाङ्मय आधारित अनुक्रमणिका निर्माण की परम्परा

संस्कृत वाङमय में अनुक्रमणिका निर्माण की बहुत समृद्ध परम्परा रही है। वैदिक साहित्य की रक्षा के लिए एक नवीन शैली के ग्रन्थों की रचना की गई, जिसमें वैदिक ऋषि, देवता, छन्द आदि की सूची प्रस्तुत की गयी है। ये ग्रन्थ अनुक्रमणी (सूची) के नाम से प्रख्यात है।[117] मन्त्रों के विशुद्ध अर्थबोध के लिए तथा मन्त्र पाठ के उचित क्रम के लिए अनुक्रमणी विषयक ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी और महत्त्वपूर्ण स्वीकार किया जाता था। अणुक्रमणी निर्माण में मन्त्र पाठ किंवा वेद पाठ की दस महत्त्वपूर्ण पद्धतियों को आधार बनाया गया है- पद, क्रम, जटा, माला, शिखा, लेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और घन।[118]

षड्गुरुशिष्य ने "सर्वानुक्रमणिका" पर "वेदार्थदीपिका" नामक टीका ११८७ के लगभग लिखे थे। परम्परा में इसे कात्यायन[119] (३५० ई.पू.) की रचना बताया जाता है। अनुक्रमणी शीर्षकप्राप्त अन्य पाँच ग्रन्थों आर्षानुक्रमणी, छन्दोनुक्रमणी, देवतानुक्रमणी, अनुवाकानुक्रमणी और सूक्तानुक्रमणी का रचयिता शौनकऋषि को स्वीकार किया जाता है।[120] षड्गुरुशिष्य के अनुसार- "ऋग्वेद की रक्षा के लिए शौनक[121] ने दस अनुक्रमणियों की रचना की थी"। ऋक्सर्वानुक्रमणीवृत्ति में दसों ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है-

शौनकीया दश ग्रन्थस्तदा ऋग्वेदगुप्तये।

आर्ष्यनुक्रमणीत्याद्या छान्दसी दैवती तथा।

---

[117] संस्कृत-वाङ्मय का वृहद् इतिहास, पृ.सं.२१-२२

[118] वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ.सं.१०१

[119] वाजिनांसूत्रकृत्साम्नामुपग्रंथस्यकारकः। स्मृतेश्चकर्त्ताश्लोकानांभ्राजानाम्नांवकारकः॥
महावार्त्तिकनौकारःपाणिनीयमहार्णवे। योगाचार्यःस्वयंकर्त्तायोगशास्त्रनिदानयोः॥
एवंगुणगणैर्युक्तःकात्यायनमहामुनिः। तपोयोगान्निर्ममेयःसर्वानुक्रमणीमिमाम्"॥

[120] सर्वानुक्रमणी,पृ.सं. xiii

[121] शौनकीया दश ग्रन्थास्तदा ऋग्वेदगुप्तये। ऋक्सर्वानुक्रमणीवृत्ति की भूमिका.

अनुवाकानुक्रमणी सूक्तानुक्रमणी तथा

ऋक्पादयोर्विधाने च बार्हदैवतमेव च

प्रातिशाख्यं शौनकीयं स्मार्तं दशमुच्यते।।[122]

"सर्वानुक्रमणी" कात्यायन की कृति है। इसमें पाँच अध्याय है। ग्रन्थ का मुख्यांश ऋग्वेद के प्रत्येक सूक्त के प्रथम पद, प्रत्येक सूक्त में ऋचाओं की संख्या, सूक्त के ऋषि का नाम और उसका गोत्र, सूक्त के मन्त्र के देवता और समग्र सूक्त या विविध अंशों के छन्दों का विस्तृत विवरण दिया गया है।[123] प्रमुख अनुक्रमणी-ग्रन्थ इस प्रकार है[124] :

2.2. ऋग्वेदीय अनुक्रमणिकाएँ

प्रत्येक संहिता के समस्त आवश्यक विषयों के ज्ञान के लिए अलग-अलग अनुक्रमणिकाएँ हैं, इनमें अपनी-अपनी संहिताओं के क्रमानुसार ही ऋषि, देवता, छन्द आदि का पूर्ण विवरण दिया गया है। इसी कारण सहस्रों वर्ष बाद भी वैदिक संहिताओं का मूल रूप तथा पाठ पद्धति आज भी ज्यों-की-त्यो है।[125]

2.2.1. आर्षानुक्रमणी

आर्षानुक्रमणि तीन सौ श्लोकों का ग्रन्थ है। इसमें ऋग्वेद के ऋषियों और उनकी वंशावली संगृहीत किया गया है। यह ऋग्वेद के मण्डल-क्रमानुसार दस अध्यायों में विभक्त है।

2.2.2. छन्दोनुक्रमणी

इस अनुक्रमणी में ऋग्वेद के छन्दों की संख्या, प्रत्येक छन्द में श्लोकों की संख्या, और समस्त श्लोकों और सूक्तों की संख्या की सूची दी गयी है। ऋग्वेद में ऋचाओं की कुल संख्या १०४०२ है।

---

[122] संस्कृत- वाङ्मय का वृहद् इतिहास, पृ.सं.४८५

[123] वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ.सं.२४६

[124] संस्कृत- वाङ्मय का वृहद् इतिहास, पृ.सं.४८५

[125] संस्कृत- वाङ्मय का वृहद् इतिहास, पृ.सं.४८५

2.2.3. देवतानुक्रमणी

देवतानुक्रमणी में देवताओं की विवेचना की गयी है। वर्तमान में इसकी एक भी मातृका उपलब्ध नहीं है लेकिन षड्गुरुशिष्य द्वारा संगृहीत १० श्लोक प्राप्त होते है।

2.2.4. अनुवाकानुक्रमणी

अनुवाकानुक्रमणी में चालीस पद्य में संकलित हैं। जिसमें ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के अनुवाकों के प्रतीक, सूक्तों की संख्या और द्वितीय से दशम मण्डल के अनुवाकों की अकारादि-क्रम में सूची दी गयी है।

2.2.5. सूक्तानुक्रमणी

सूक्तानुक्रमणी में सूक्तों की विवेचना की गयी है। षड्गुरुशिष्य ने अपनी वेदार्थदीपिका में एक और अनुक्रमणी की चर्चा की है जिसमें प्रत्येक मण्डल के अन्तिम ऋचाओं की सूची थी-

"मंडलान्त्यानामृचामनुक्रमणे।"[126]

2.2.6. पादानुक्रमणी या पादविधान

पादानुक्रमणी अर्थात् पंक्तियों या पादों की सूची। यह अनुक्रमणी मिश्रित छन्दों में है। सम्पूर्ण ग्रन्थ दो भागों में विभाजित है। प्रत्येक में सात श्लोक भाष्य के साथ हैं। पादविधान में ऋग्वेद के शब्दों की सूची है।

2.2.7. ऋग्विधान

यह ग्रन्थ चार अध्यायों में विभक्त है। निन्यानबे श्लोकों में सूक्त, वर्ग, पाद, मन्त्र आदि के जप का विधान है। इनका उपयोग विशेष कार्यों की सिद्धि के लिए किया जाता है।

2.2.8. बृहद्देवता

वृहद्देवता ऋग्वेद की शाकल शाखा से सम्बद्ध है। इसमें आठ अध्यायों में कुल बारह सौ पद्य हैं। इसमें सभी सूक्तों के देवताओं का स्वरूपों, उनका स्थानों, उनकी विशेषताओं तथा अर्ध ऋचाओं और मन्त्रों का वर्णन है। मैकडोनल के अनुसार यह ग्रन्थ प्राचीनतम व्यवस्थित आख्यान ग्रन्थ है।

---

[126] वेदार्थदीपिका ८.१

2.2.9. चरणव्यूहसूत्र

चरणव्यूहसूत्र समस्त वैदिक शाखाओं का ज्ञापक है। यह पाँच खण्डों में विभक्त है। प्रथम ऋग्वेद खण्ड में ऋग्वेद की आश्वलायनी, शांखायनी आदि शाखाओं, उनके वर्गों और ऋचाओं की संख्या सूची दी गई है।

2.2.10. ऋक्सर्वानुक्रमणी

इस अनुक्रमणी में सूत्ररूप में शौनकादि के सभी ग्रन्थों की विषयवस्तु होने के कारण इसे सर्वानुक्रमणी नाम दिया गया है। प्रथम से द्वादश काण्ड इस ग्रन्थ की भूमिका रूप में परिभाषा से सम्बन्धित हैं-

"इति द्वादश काण्डी तु परिभाषा प्रवर्णिता।"

2.3. यजुर्वेदीय अनुक्रमणिकाएँ

यजुर्वेद की अनेक अनुक्रमणिकाएँ हैं। एक तैत्तिरीय की आत्रेयी शाखा की है, दूसरी चारायणीय शाखा की और तीसरी वाजसनेयी की माध्यन्दिन शाखा की है।

2.3.1. काण्डानुक्रम या काण्डानुक्रमणिका

आत्रेयी शाखा की अनुक्रमणिका में इसकी संहिता, ब्राह्मण एवम् आरण्यक इन तीनों विषयों की सूची दी गई है। यह तैत्तिरीय संहिता की यज्ञविषयक अनुक्रमणी है।

2.3.2. सर्वानुक्रमणी या सर्वानुक्रमसूत्र

सर्वानुक्रमसूत्र में पाँच अध्याय और १०२८ सूक्त हैं। सर्वानुक्रमसूत्र में खिल सहित यजु: माध्यन्दिन संहिता के देवता, ऋषियों, तथा छन्दों की सूची दिया गया है।

2.3.3. अनुवाक सूत्र या अनुवाकनुक्रमणी या अनुवाकाध्याय

कात्यायनप्रणीत इस ग्रन्थ को अनुवाक परिशिष्ट भी कहते हैं। यह ग्रन्थ माध्यन्दिन और वाजसनेयि संहिता के ऋषियों, देवताओं तथा छन्दों की सूची प्रस्तुत करता है।

2.4. सामवेदीय अनुक्रमणिकाएँ

2.4.1. सामसर्वानुक्रमणी

इसमें सामवेदीय साहित्य (आठ ब्राह्मण ग्रन्थों, लक्षणग्रन्थों, प्रातिशाख्यों, शिक्षा ग्रन्थों) के परिगणन के साथ ही सप्तविध प्रकृति गानों गायत्र, आग्नेय, ऐन्द्र, पावमान, अर्कद्वन्द (*छान्दसगान*) तथा महानाम्नी का विशद विवरण प्राप्त होता है।

2.4.2. नैगेय शाखानुक्रमणी

इस अनुक्रमणी का विभाजन दो भागों में है। एक भाग में आर्चिक संहिता के ऋषियों और दूसरे में मैत्रायणी संहिता के मन्त्रों के देवताओं की सूची दी गयी है।

2.4.3. अथर्ववेदीय अनुक्रमणिकाएँ

2.4.3.1. बृहत्सर्वानुक्रमणिका

बृहत्सर्वानुक्रमणिका के मन्त्रों के प्रतीक शौनकीय से प्राप्त होते हैं। इसमें ग्यारह पटल है। इसमें अथर्वसंहिता के बीस काण्डों के मन्त्रों के ऋषि, देवता और छन्दों का वर्णन किया गया है।

अनुक्रमणी-साहित्य का विकास वेदों की रक्षा के लिए हुआ था। इसमें वेदों के ऋषियों, छन्दों देवताओं, सूक्तों, अनुवाकों तथा पदों की सूची संकलित की गयी है।[127] इतना ही नहीं, मन्त्रों की संख्या, पदों की संख्या और वर्णों की संख्या भी प्रस्तुत की गई है। फलस्वरूप वेदों में किसी प्रकार का प्रक्षेप नहीं हो सका है। इस प्रकार अनुक्रमणी-ग्रन्थ से तात्पर्य है प्राचीन वैदिक साहित्य के विभिन्न अंशों का क्रमबद्ध सूक्ष्म विवेचन और तत्सम्बन्धित सभी ज्ञेय विषयों का मार्गदर्शन एवं दिग्दर्शन कराने वाला सहायक ग्रन्थ।[128]

इन अनुक्रमणियों से प्राचीन वेदविषयक अनुसन्धान, विवेचन-शैली एवम् आलोचनात्मक दृष्टि का परिज्ञान होता है। ये प्राचीन-कालिक शोध-कार्य शैली की निदर्शिकाएँ हैं। पूर्णता, प्रामाणिकता एवं सूक्ष्मता इनकी विशेषताएँ हैं। वेदों के पाठ-

---

[127] संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ.सं.९५

[128] संस्कृत-वाङ्मय का वृहद् इतिहास, पृ.सं.४८३

सम्पादन एवं उन्हें समझने के लिए आज भी इनकी वही उपयोगिता है जो इनके रचना-काल में थी।

2.5. पूर्ववर्ती शोध कार्य

पातञ्जल योग की ऑनलाइन अनुक्रमणिका से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण पूर्ववर्ती शोध निम्नलिखित इस प्रकार है-

ऑनलाइन अनुक्रमणिका के विषय में महत्त्वपूर्ण कार्यों में से एक माइकल पी. गारोफेलो (*Michael P. Garofalo*) ने कैलिफोर्निया में निर्माण किया है। इनके द्वारा पातञ्जल योगसूत्र के अंग्रेजी भाषानुवाद की अनुक्रमणिका बनाई गई है। निम्नलिखित यूआरएल पर यह ऑनलाइन उपलब्ध है- http://www.egreenway.com/yoga/yogasutras.htm#Index

चार्ल्स जॉनस्टन (*Charles Johnston*) ने न्यू यॉर्क में १९१२ में अंग्रेजी में अनुदित पातञ्जल योगसूत्र लिखे थे। यह निम्नलिखित यूआरएल पर ऑनलाइन उपलब्ध है- http://www.sacred-texts.com/hin/ysp/index.htm#contents

पातञ्जल योगसूत्रों की फ्लोरिडा में स्थित अभ्यास आश्रम नामक संस्था द्वारा परिचयात्मक ऑनलाइन अनुक्रमणिका बनायी गई है। जो निम्नलिखित यूआरएल पर ऑनलाइन उपलब्ध है- http://www.swamij.com/index-yoga-meditation-yoga-sutras.htm

एलिस ए. बेली (*Alice A Baily*) द्वारा अंग्रेजी में अनूदित पातञ्जल योगसूत्रों की ऑन-लाइन सूची बनायी गई है। इसका संस्कृत भाषा में अनुबाद ज्वाल खुल (*Djwal Khul*) ने किया है। यह भी निम्नलिखित वेब लिंक पर ऑनलाइन उपलब्ध है- http://www.thenazareneway.com/index_yoga_sutras_of_patanjali.htm

रोनाल्ड स्टीनर (*Ronald Steiner*) द्वारा निर्मित ऑनलाइन योगसूत्रों की अनुक्रमणिका प्राप्त होती है, जो ऑनलाइन उपलब्ध है- https://www.ashtangayoga.info/philosophy/yoga-sutra/

भारत में योग अध्ययन केंद्र संस्था द्वारा पातञ्जल योगसूत्रों की ऑनलाइन अनुक्रमणिका बनायी गई है। निम्नलिखित यूआरएल पर यह ऑनलाइन उपलब्ध है- http://www.yogastudies.org/yoga-text-freenotes/yoga-sutra-freenotes/

पातञ्जल योग के अतिरिक्त प्रो. गिरीश नाथ झा ने आरडीबीएमएस (*RDBMS*) तकनीक से अमरकोश, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, आयुर्वेद, बृहदारण्यकोपनिषद् और वेदान्तसूत्र की ऑनलाइन अनुक्रमणिका जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्यविद्या संस्थान में बनाई है। ये सभी इस लिंक पर ऑनलाइन उपलब्ध है- http://sanskrit.jnu.ac.in/elearning/index.html

---

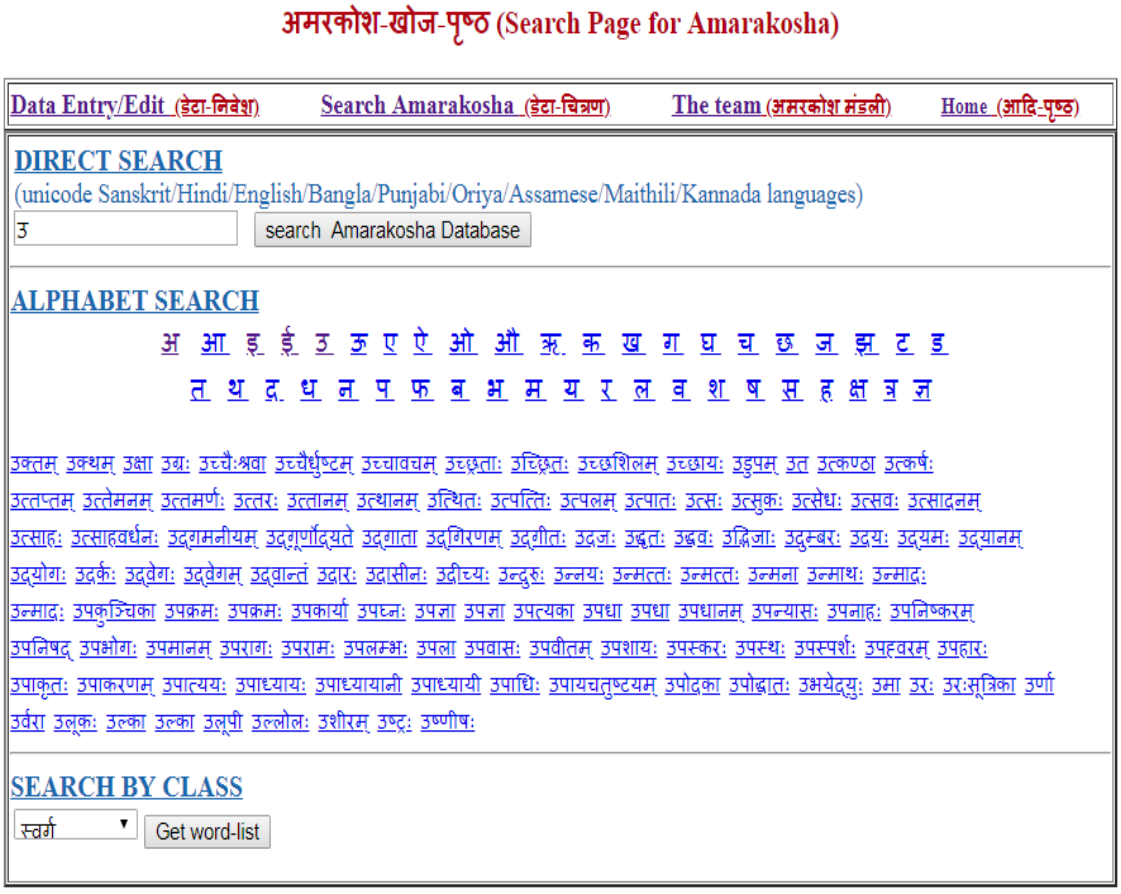

चित्र सं.१. JNU संस्कृत सर्वर में उपलब्ध अमरकोश अनुक्रमणिका

संस्कृत शिक्षाग्रन्थों के ऑनलाइन संस्करण में वेद, योग और महाभारत आदि आईटीएक्स (*ITX*), एचटीएमएल (*HTML*), पीएस (*PS*), एक्सडीवीएनजी (*XDVNG*), जीआईएफ (GIF) और पीडीएफ (*PDF*) प्रारूप में उपलब्ध है- https://sanskritdocuments.org/

चित्र सं.२. संस्कृत शिक्षाग्रन्थों का ऑनलाइन संस्करण

टेक्सास विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान अनुसंधान केंद्र ने ऋग्वेद के रोमन संस्करण की ऑनलाइन प्रति तैयार की है। यह इस साइट पर ऑनलाइन उपलब्ध है- http://www.utexas.edu/colalcenters/lrc/RVI

मानव संसाधन विकास मंत्रालय शैक्षिक संसाधनों की पहुँच बढ़ाने के लिए नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया नामक परियोजना की शुरुआत की है यह पुस्तकों, लेखों, वीडियों, ऑडियों, थीसिस और विभिन्न शैक्षणिक सामग्रियों सहित अलग-अलग प्रकार की डिजिटल सामग्री के बारे में जानकारी (*मेटाडाटा*) को संग्रहित करती है- https://ndl.iitkgp.ac.in/

वर्तमान शोध के सर्वेक्षण अनुसार अभी तक योगसूत्र का आरडीबीएमएस (*RDBMS*) तकनीक से ऑनलाइन अनुक्रमणी से निर्मित नहीं हुई है इसीलिए यह शोध महत्त्वपूर्ण एवं नवोन्मेषपरक है। दिवाकर मनी (*महाभारत*), परितोष दास (*बृहदारण्यक उपनिषद्*), रजनीश पाण्डेय (*सुश्रुत संहिता*) आदि ने ऑनलाइन अनुक्रमणिका निर्माण से सम्बन्धित कार्य किया है। ये कार्य वर्तमान शोध में आदर्श के रूप में लिया जा सकता हैं। वर्तमान शोध

ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका निर्माण में आरडीबीएमएस (*RDBMS*) और आरडीएमएफएस (*RDMFS*) तकनीक का प्रयोग किया गया है।

2.6. शोध प्रविधि

पातञ्जल योगसूत्र भारतीय वैदिक ज्ञान-विज्ञान के साररूप एवं व्यावहारिक जीवन में उपयोगी व महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक युवा पीढ़ी न केवल योग करने में रुचि ले रही है वरन् इसके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों को गम्भीरता से अध्ययन करने की ओर भी प्रवृत्त हुई है। ऐसे में आज विश्व में योग के सैद्धान्तिक और प्रायोगिक पक्षों को प्रस्तुत करने में समर्थ अनेक प्रामाणिक विशेषज्ञों की आवश्यकता है। योगसूत्र ज्ञान की महत्त्वपूर्ण शाखाओं में अन्यतम है। इस ज्ञान को समझने के लिए इस पर भाष्य, विवरण, टीका, वृत्ति और वार्तिक लिखे गये हैं। योगसूत्र के प्रतिनिधि ग्रन्थों को इसलिए ऑनलाइन किया जा रहा है क्योंकि इन ग्रन्थों की वैश्विक स्तर पर माँग बढ़ी हैं। इन ग्रन्थों के पाठ बहुत महत्त्वपूर्ण और व्यापक हैं। इस प्रकार योगसूत्र और उसके प्रतिनिधि ग्रन्थों की अनुक्रमणिका बनाने से अनुसंधानकर्त्ता और उपयोगकर्त्ता आसानी से उपयोग करे सकेंगे।

वर्तमान शोध ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका में विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और तकनीकी पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। इसक उद्देश्य योगसूत्र और प्रतिनिधि ग्रन्थों के अध्ययन करने के पश्चात् उन ग्रन्थों की अनुक्रमणिका निर्माण करना है। ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका का निर्माण इस प्रकार किया गया है-

2.6.1. योगसूत्र और इसके प्रतिनिधि ग्रन्थों के मूल पाठ का चयन

योगसूत्र और प्रतिनिधि ग्रन्थों के संस्करणों का अध्ययन करने के पश्चात् इसके मूल पाठ का चयन किया गया। योगसूत्र और उसकी प्रतिनिधि ग्रन्थों के अनेक भाष्य, टीका और वृत्ति के अनेक संस्करण उपलब्ध हैं। इन ग्रन्थों के कुछ महत्त्वपूर्ण संस्करण इस प्रकार हैं-

पातञ्जलयोगसूत्राणि (*वाचस्पतिमिश्रविरचितटीकासंवलितव्यासभाष्यसमेतानि तथा भोजदेवविरचितराजमार्तण्डाभिधवृत्तिसमेतानि*) इस ग्रन्थ के सम्पादक काशीनाथ शास्त्री आगाशे हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन आनन्दाश्रम मुद्रणालय पुणे से हुआ है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण १९०४ और द्वितीय संस्करण १९१९ का है। इससे पातञ्जलयोगसूत्र को चार पादों

में विभक्त किया गया है। ग्रन्थ के अन्त में पातञ्जलयोगसूत्रपाठ दिया गया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में शब्दों की अनुक्रमणिका अकारादि क्रम में दी गई हैं।

पातञ्जलयोगदर्शनम् (*व्यासभाष्य-संवलितम् तच्च योगसिद्धि-हिन्दीव्याख्योपेतम्*) इस ग्रन्थ के व्याख्याकार डाँ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव हैं। यह ग्रन्थ का प्रकाशन चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी २०११ में पुनर्मुद्रित हुई है। इस ग्रन्थ में सूत्र और भाष्य की हिन्दी-व्याख्या योगसिद्धि के अतिरिक्त मूल पाठ की भी हिन्दी-व्याख्या की गई है। मूल पदों की व्याख्या के समय उनके हिन्दी पर्याय और संस्कृत पर्याय दोनों ही दिये गये हैं।

Patanjali's Yoga Sutras with the Commentary of Vyasa and the Gloss of Vachaspati Misra

इस ग्रन्थ का अनुवाद राम प्रसाद द्वारा किया गया है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशक प्रा. लि. ने १९९८ में किया है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण १९१२ में पाणिनि कार्यालय इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ में मूल योगसूत्र, व्यासभाष्य है। साथ ही योगसूत्र, व्यासभाष्य और तत्त्ववैशारदी टीका अंग्रेजी भी अनुवाद का किया गया है। ग्रन्थ के अन्त में सूत्रों की अकारादि क्रम में सूची दी गयी है।

पातञ्जलयोग दर्शनम् (*महर्षि व्यासदेव प्रणीत भाष्य तथा राजर्षि भोजदेव प्रणीत वृत्ति*) इसका श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य और श्री स्वामी विज्ञानाश्रमजी ने हिन्दी भाषानुवाद किया है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन दी फाईल आर्ट प्रिन्टिंग प्रेस, अजमेर से १९३२ में हुआ है। इस ग्रन्थ में मूल योगसूत्र, व्यासभाष्य और भोजवृत्ति संकलित हैं। इनका हिन्दी भाषा में अनुवाद भी उपलब्ध है। इस ग्रन्थ के आरम्भ में ही अकारादिक्रम में योगानुक्रमणिका की सूची दी गई है। ग्रन्थ के अन्त में पातञ्जलयोगसूत्र के मूल पाठ उपलब्ध है।

पातञ्जलयोग दर्शन (*व्यासभाष्य हिन्दी व्याख्या*) इसके व्याख्याकार स्वामी हरिहरानन्द आरण्य तथा सम्पादक डाँ. रामशंकर भट्टाचार्य हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली से हुआ है। ग्रन्थ का प्रथम संस्करण लखनऊ से १९५३ में और द्वितीय संशोधित संस्करण वाराणसी से १९७४ में प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ का वैशिष्ट्य है कि इसमें योगशास्त्र के मतों के साथ-साथ यह भी दिखाया गया है कि, किस प्रकार आज भी

योग-साधनेच्छु व्यक्ति इस विद्या का अनुशीलन करके शास्त्र निर्दिष्ट फलों को प्राप्त कर सकते हैं। ग्रन्थ के अन्त में परिशिष्ट (काल और देश या अवकाश, ज्ञानयोग, और कर्मप्रकरण) है। योगदर्शन की अकारादिक्रम में विषयसूची का भी उल्लेख है।

पातञ्जलयोगसूत्राणि (*वाचस्पतिमिश्रविरचितटीकासमेतव्यासभाष्यसमेतानि*) इस ग्रन्थ के व्याख्याकार श्रमस्थ पण्डित हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन आनन्द आश्रम मुद्रणालय पुणे से १९०६ में हुआ है। इस ग्रन्थ में मूल योगसूत्र के साथ व्यासभाष्य और तत्त्ववैशारदी टीका संकलित हैं। इस ग्रन्थ के अन्त में पातञ्जलयोगसूत्रपाठ और योगसूत्रों की अकारादिक्रम में विषयसूची भी दी गई है।

इन सभी उपलब्ध संस्करणों का अध्ययन करने के पश्चात् काशीनाथ शास्त्री आगाशे जी का ग्रन्थ शोध के लिए अत्यधिक उपयुक्त पाया गया है। इस ग्रन्थ में योगसूत्र, व्यासभाष्य, तत्त्ववैशारदी टीका, भोजवृत्ति के मूल पाठों को अच्छी तरह से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार यह संस्करण शोध के लिए उपयुक्त है। शोध के लिए प्रामाणिक पाठ का चयन करने के पश्चात्, अगले चरण में अनुक्रमणिका के लिए इलेक्ट्रॉनिक डेटा का निर्माण करना होता है।

2.7. ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका प्रणाली का निर्माण

इस शोध में सर्च इंजन के साथ अनुक्रमणिका का निर्माण भी किया गया है। यह सर्च इंजन जावा सर्वर पेज (*JSP*) (जावा सर्वलेट/*Java servlets*) के द्वारा अपाचे टॉमकैट ४.० वेबसर्वर (*Apache Tomcat 4.0 web server*) के माध्यम से कार्य करता है। यह डेटा यूनीकोड प्रारूप (*Unicode*) में एमएस-एसक्यूएल सर्वर २००५ (*MS-SQL Server 2005*) में संगृहीत है। डेटाबेस (*Database*) सर्वर के प्रारम्भिक भाग (*Front-End*) को संयोजित करने के लिए एमएस-जेडीबीसी (*MS-JDBC*) का प्रयोग किया गया है। यह अनुक्रमणिका देवनागरी यूनीकोड में इनपुट और आउटपुट के साथ http://sanskrit.jnu.ac.in/yoga/index.jsp लिंक पर ऑनलाइन उपलब्ध है। इस अनुक्रम प्रणाली का उपयोग अन्य ग्रन्थों के निर्माण में भी किया जा सकता है। योगानुक्रमणिका प्रणाली की संरचना इस प्रकार है-

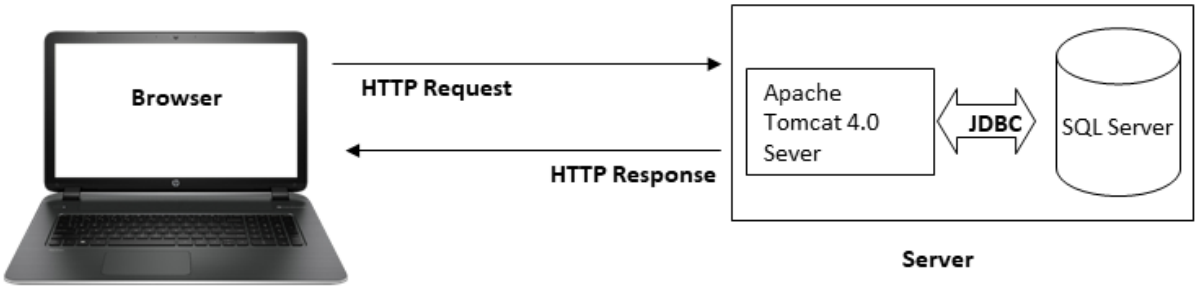

चित्र सं.३. योगानुक्रमणिका प्रणाली की संरचना

2.8. सम्बन्धित डेटाबेस प्रणाली का निर्माण

आरडीबीएमएस (*RDBMS*) तकनीक का प्रयोग करके योगसूत्र और उसके प्रतिनिधि ग्रन्थों की संरचना के अनुसार डेटाबेस की संरचना को विकसित किया गया है। सर्वप्रथम योगसूत्र और उसके प्रतिनिधि ग्रन्थों की संरचना को एक सारणीबद्ध तालिका में व्यवस्थित किया गया है। योगसूत्र चार पादों समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद, और कैवल्यपाद में विभक्त है। तालिका में योगसूत्र, व्यासभाष्य, तत्त्ववैशारदी टीका और भोजवृत्ति को भी व्यवस्थित किया गया है। ग्रन्थ की संरचना को निश्चित करने के पश्चात्, देवनागरी यूनीकोड में एमएस-एसक्यूएल सर्वर २००५ (*MS-SQL server 2005*) में डेटाबेस संरचना का निर्माण किया गया है। डेटाबेस संरचना की तालिका इस प्रकार है-

सूत्र संख्या	योगसूत्र	व्यासभाष्य	तत्त्ववैशारदी टीका	भोजवृत्ति

चित्र सं.४. डेटाबेस की प्रमुख तालिका

उपर्युक्त प्रथम तालिका में सूत्र संख्या है। द्वितीय तालिका में योगसूत्र, तृतीय तालिका में व्यासभाष्य, चतुर्थ तालिका में तत्त्ववैशारदी टीका और पञ्चम् तालिका में भोजवृत्ति है।

इस डेटाबेस (*Database*) के माध्यम से जब कोई प्रयोगकर्ता या अनुसंधानकर्ता मुख्य शब्द का अन्वेषण करता है तो उसको मूल सूत्र देवनागरी यूनीकोड में प्राप्त होता है। पाद-संख्या और सूत्र-संख्या की पुनर्रावृत्ति को रोकने के लिए, पाद तथा सूत्र-संख्या को समान तालिका में ही लिखा गया है। आवश्यकतानुसार उनको प्रोग्रम कॉल किया जाता है। ऐसा करने से अनावश्यक डेटाबेस (*Database*) की पुनरुक्ति नहीं होती है।

2.9. अन्वेषण हेतु जावा सर्वर इंजन का निर्माण

योगसूत्र का सर्च इंजन जावा (*Java*) में निर्माण किया गया है। इसको जावा सर्वर अपाचे टॉमकैट (*Java server Apache Tomcat*) का प्रयोग करते हुए एक जेएसपी सर्वलेट (*JSP Servlets*) में बनाया गया है। यद्यपि सर्वलेट (*Servlets*) किसी भी प्रश्न का उत्तर देने में समर्थ होता हैं पर सामान्यत: वेब सर्वर द्वारा होस्ट किए गए एप्लिकेशन (*Applications*) को विस्तृत करने के लिए ही उनका उपयोग किया जाता है। इस प्रकार के एप्लिकेशन (*Applications*) के लिए जावा सर्वर तकनीक के द्वारा एचटीटीपी (*HTTP*) से सम्बन्धित विशेष जावा (*Java*) क्लासेस (*Classes Programs*) बनायी गई हैं।

2.10. आउटपुट प्रदर्शन हेतु प्रतिनिधि वेबपेज का निर्माण

योगानुक्रमणिका का फ्रंट एंड (*मुख पृष्ठ*) http://sanskrit.jnu.ac.in/yoga/index.jsp लिंक पर ऑनलाइन उपलब्ध है। यह मुख्य पृष्ठ उपयोग कर्ता द्वारा एचटीएमएल टेक्स्ट बॉक्स (*HTML Text Box*) में देवनागरी यूनीकोड में इनपुट (*Input*) लेता है। इस इनपुट (Input) को जावा सर्वलेट (*Java Servlets*) सर्च इंजन में अन्वेषित करते हुए डेटाबेस तक पहुँचाता है। सर्च योगसूत्र डेटाबेस (*Search YogaSutra*) लिखे हुए बटन पर क्लिक करने से यह जावा सर्वलेट इंजन (*Java Servlets Engine*) के डेटाबेस में अन्वेषण करता है।

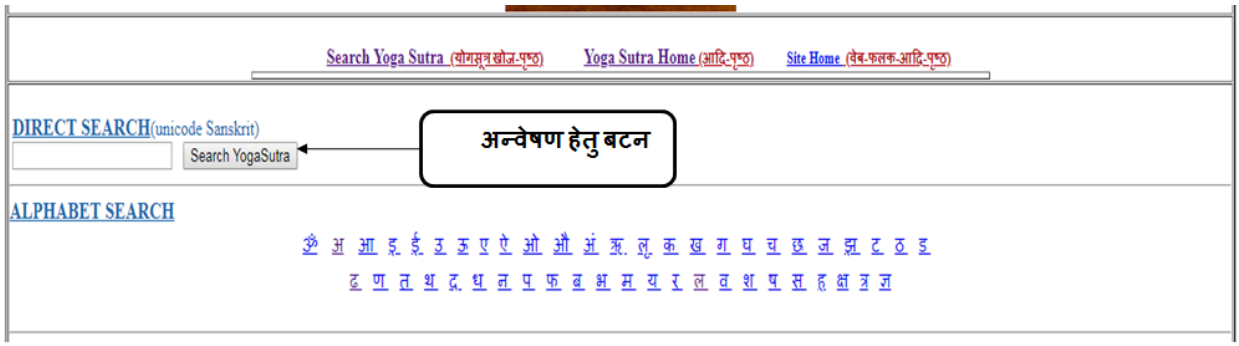

संगृहीत डेटा में मुख्यपद (*Keyword*) का मिलान करता है और मुख्यपद (*Keyword*) मिलान के पश्चात सम्बन्धित सन्दर्भ के साथ देवनागरी यूनीकोड में आउटपुट प्राप्त होता है।

2.11. डेटाबेस एक्सेस के चरण

योगानुक्रमणिका को निम्नलिखित तीन प्रकार से सर्च (*अन्वेषण*) किया जा सकता है

- प्रत्यक्ष अन्वेषण (*Direct Search*)
- अकारादिक्रम अन्वेषण (*Alphabetical Search*)
- अध्याय→सूत्र-संख्या→योगसूत्र क्लिक के द्वारा (*Clicking On*)

प्रत्यक्ष अन्वेषण तीन प्रकार से किया जा सकता है-

2.11.1. प्राथमिक चरण

प्रत्यक्ष अन्वेषण पद्धति में यह प्रणाली ऑनलाइन योगानुक्रमणिका ग्रन्थ के एक शब्द का इनपुट लेता है और उपयोगकर्ता को यथाशीघ्र परिणाम देता है। जैसे- उपयोग कर्ता 'योग' के विषय में जानना चाहता है तो यह प्रणाली इस शब्द को डेटाबेस में अन्वेषित करेगा। यदि योग शब्द प्राप्त होता है तो उससे सम्बन्धित सभी सूचनाएँ प्रथम पृष्ठ पर हाइपरलिंक प्रणाली (*Hyperlink Mode*) में आ जाती है।

2.11.2. द्वितीय चरण

इस प्रक्रिया में उपयोगकर्ता कुछ अधिक सूचनाओं के लिए किसी एक हाइपरलिंक शब्द पर क्लिक करेगा। ऐसा करने से उसे विस्तृत संदर्भ प्राप्त होगा।

2.11.3. तृतीय चरण

सन्दर्भ प्राप्त होने के पश्चात अगला चरण पृथक-पृथक अवस्थित ऑनलाइन संस्कृत शब्दकोशों को जोड़ना होता है। जैसे- ऑनलाइन बहुभाषी अमरकोश (*साइट,*[129]) स्पोकेन संस्कृत शब्दकोश (*साइट क्लाउसग्लाशॉफ, जर्मनीद्वारा* [130]), आप्टेसंस्कृत-अंग्रेजी

[129] http://sanskrit.jnu.ac.in/amara/index.jsp

[130] http://spokensanskrit.de

शब्दकोश,[131] ऑनलाइन मैकडोनेल संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश,[132] संस्कृत विकिपीडिया[133] आदि। इस प्रकार अन्वेषण किये गए शब्द के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए इस लिंक पर क्लिक करके प्राप्त कर सकते है। यदि कोई प्रयोगकर्त्ता विशेष जानकारी चाहता है तो यह प्रणाली उसे सम्बन्धित साइट तक पहुँचाती है।

2.12. संगणक के अनुकूल योगानुक्रमणिका

पातञ्जल योगसूत्र भारतीय योग विज्ञान का मौलिक एवम् आदि ग्रन्थ है। पातञ्जल योगसूत्र में कुल मिलाकर एक सौ पिचानवे सूत्र हैं। इन्हें चार पादों में विभाजित किया गया है जिनके नाम क्रमशः समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद और कैवल्यपाद हैं। इस अनुक्रमणिका में योगसूत्र पर आधारित अन्य प्रतिनिधि ग्रन्थों का भी डेटाबेस निर्माण किया गया है। इनका क्रम इस प्रकार है-

सूत्र→पाद→व्यासभाष्य→तत्त्ववैशारदी टीका→भोजवृत्ति

योगसूत्र की इस संरचना को आरडीबीएमएस (*RDBMS*) तकनीक के आधार पर ऑनलाइन अनुक्रमणिका का निर्माण किया गया है। प्रत्येक भाग को अलग-अलग तालिका में संगृहीत किया गया है। प्रत्येक तालिका की एक अलग पहचान है किन्तु वे एक दूसरे के साथ जुड़े हुए है। प्रथम तालिका में सूत्र-संख्या है। दूसरी तालिका में पाद और योगसूत्र, तृतीय तालिका में व्यासभाष्य, चतुर्थ तालिका में तत्त्ववैशारदी टीका और पञ्चम तालिका में भोजवृत्ति है। इनकी संरचना इस प्रकार है–

[131] http://dsal.uchicago.edu/dictionaries/apte

[132] http://dsal.uchocago.edu/dictionaries/mcdonne1

[133] http://sa.wikipedia.org/wiki/special:A11Pages

Sutra_id	Pada_n_Sutra_no_id	Vyasabhashya	Tattvavaisharadi	Bhojav-ritti
अथयोगानुशासनम्	१.१	अथेत्ययमधिकार्थ। योगानुशासनंशास्त्रम्अधिकृतंवेदितव्यम्।योगःसमाधिः।सचसार्वभौमश्चित्तस्यधर्मः।क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तम्, एकाग्रं, निरुद्धम्इतिचित्त-भूमयः।तत्रविक्षिप्तेचेतसिविक्षेपोपसर्जनी-भूतःसमाधिर्नयोग-पक्षेवर्तते।.....१	इहहि भगवान् पतञ्जलिःप्ररिप्सितस्य शास्त्रस्य सङ्क्षेपतस् तात्पर्यार्थं प्रेक्षावत् तत्-प्रवृत्त्य्-अङ्गं श्रोतुश्च सुखावबोधार्थम् आचिख्यासुर् आदाव् इदं सूत्रं रचयाञ्चकार—अत्र योगानुशासनम्। तत्रप्रथमावयवम् अथ-शब्दं व्याचष्ट—अथेत्य् अयम् अधिकारार्थः।.....१	अनेनसूत्रेणशास्त्रस्यसम्बन्धाभिधेयप्रयोजनान्याख्यायन्ते।अथशब्दोऽधिकारद्योतकोमङ्गलार्थकश्च।.....१
योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः	१.२	सर्व-शब्दाग्रहणात्सम्प्रज्ञातोऽपियोगइत्य् आख्यायते।चित्तंहि प्रख्या-प्रवृत्ति-स्थिति-शीलत्वात्त्रिगुणम्। ...२	द्वितीयंसूत्रम्अवतारयति— तस्यलक्षणेति।तस्येतिपूर्व-सूत्रोपात्तंद्विविधंयोगंपरामृशति— योगश्चित्त-वृत्ति-निरोधः।	चित्तस्यनिर्मलस्त्वपरिणामरूपस्यया।..२

तदाद्रष्टुः स्वरूपेऽव स्थानम्	१.३	स्वरूप-प्रतिष्ठातदानींचिति-शक्तिर्यथाकैवल्ये। व्युत्थान-चित्तेतुसतितथापि भवन्तीनतथा। ३	सम्प्रत्युउत्तर-सूत्रम्अवतारयितुंचोदयति—तद्-अवस्थेचेतसीति।किम्आक्षेपे।तत्-तद्-आकार-परिणत-बोधात्माखल्व्अयंपुरुषःसदानुभूयते, नतुबुद्धि-बोध-रहितः।....३	द्रष्टुःपुरुषस्यतस्मिन्कालेस्वरूपेचिन्मात्रतायामवस्थानंस्थितिर्भवति।...३
वृत्तिसारूप्यमितरत्र	१.४	व्युत्थानेयाश्चित्त-वृत्तयस्तद्-अविशिष्ट-वृत्तिःपुरुषः।तथाचसूत्रं—एकम्एवदर्शनं, ख्यातिर्एवदर्शनम्इति।चित्तम्अयस्कान्त-मणि-कल्पंसन्निधि।..४	सूत्रान्तरम्अवतारयितुंपृच्छति—कथंतर्हीति।यदितथाभवन्तोनतथा, केनतर्हिप्रकारेणप्रकाशतइत्य्अर्थः।हेतु-पदम्अध्याहृत्यसूत्रंपठति—दर्शित-विषयत्वाद्वृत्ति-सारूप्यम्इतरत्र।....४	इतरत्रयोगादन्यस्मिन्कालेवृत्तयोयावक्ष्यमाणलक्षणास्ताभिःसारूप्यंतद्रूपत्वम्।....४

चित्र सं. ५. डेटाबेस में सूत्र का प्रारूप

पाद तालिका में दो पंक्ति है जैसे- पाद और पाद नाम एवं पाद संख्या है। पाद इस ग्रन्थ के पाद का नाम और पाद संख्या को निर्देशित करता है। जैसा कि सूत्रों को पाद में विभाजित किया गया है। पाद की तालिका इस प्रकार है-

Pada_id	Paada_Name_n_sequential
१	समाधिपाद
२	साधनपाद
३	विभूतिपाद
४	कैवल्यपाद

चित्र सं.६. डेटाबेस में पादों की संरचना

तृतीय अध्याय

योगसूत्र की ऑनलाइन अनुक्रमणिका

इस अध्याय में ऑनलाइन योगानुक्रमणिका तन्त्र की चर्चा की गई है। इस संगणकीय मॉडल को विकसित करने के लिए तथा डेटाबेस में शब्दों का अन्वेषण करने के लिए वेब प्रारूप में जावा का उपयोग किया गया है। यह प्रणाली योगदर्शन की परम्परा के प्रतिनिधि ग्रन्थों के आधार पर निर्मित हुई है। यह ऑनलाइन प्रणाली योगसूत्र के अनुक्रमणी शब्दों का विश्लेषण तथा पहचान करता है। इस प्रणाली में तीन प्रकार अन्वेषण से किया जाता है-

१. प्रत्यक्ष अन्वेषण

२. अकारादि-क्रम अन्वेषण

३. अध्याय→सूत्रसंख्या→योगसूत्र क्लिक के द्वारा अन्वेषण

यह शब्दानुक्रमणी ऐसे सूत्रों के आधार पर विकसित किया गया है जो टेक्स्ट फाइल में संगृहीत है। इन टेक्स्ट फाइल को query language में अर्थात् एसक्यूएल (*SQL)*में संगृहीत (*Store*) किया गया है। संग्रहण की प्रक्रिया में UTF-8 को आदर्श मॉडल (*Standard Model*) के रूप बनाया गया है। अतः इस डेटाबेस में किसी भी शब्द अन्वेषण UTF-8 format में किया जा सकता है। इस अन्वेषण में उन शब्दों या मुख्य पद (*Keyword*) से सम्बन्धित सभी सूचनाएँ जो कि योगसूत्र डेटाबेस में संगृहीत है, उन्हे दर्शाता है या प्रस्तुत करता है। इस अन्वेषण के फलस्वरूप उन शब्दों पर क्लिक करने से योगसूत्र, सूत्र-संख्या, व्यासभाष्य, तत्त्ववैशारदी टीका और भोजवृत्ति के सभी सन्दर्भ प्रदर्शित हो जाते हैं।

3.1. योगानुक्रमणिका की संरचना

यह योगानुक्रमणिका पूर्णतः एक जावा सर्वलेट (*Java Servlet*) है। इसका फ्रन्ट एन्ड (*Front-End*) जेएसपी (*JSP*) है और आरडीबीएमएस (*RDBMS*) बैक एन्ड (*Back-End*) है। जेडीबीसी (*JDBC*) कनेक्टिविटी दोनों फ्रन्ट और बैक एन्ड के मध्य सम्पर्क स्थापित करता है। यह अनुक्रमणिका सर्वलेट अपाचे टॉमकैट ४.० (*Apache Tomcat 4.0*) वेब सर्वर पर चलता है। आरडीबीएमएस (*RDBMS SQL Server-2005*) डेटाबेस के लिए यूनीकोड

प्रणाली का उपयोग किया गया है। डेटाबेस पाँच सारणियों में संगृहीत है जिसके नाम योगसूत्र, सूत्रसंख्या, व्यासभाष्य, तत्त्ववैशारदी टीका और भोजवृत्ति है।

3.2. योगानुक्रमणिका की प्रक्रिया

इस पद्धति में तीन प्रकार के अन्वेषण के विकल्प हैं- प्रत्यक्ष अन्वेषण, अकारादि-क्रम में और देवनागरी यूटीएफ -८ (*UTF-8*):

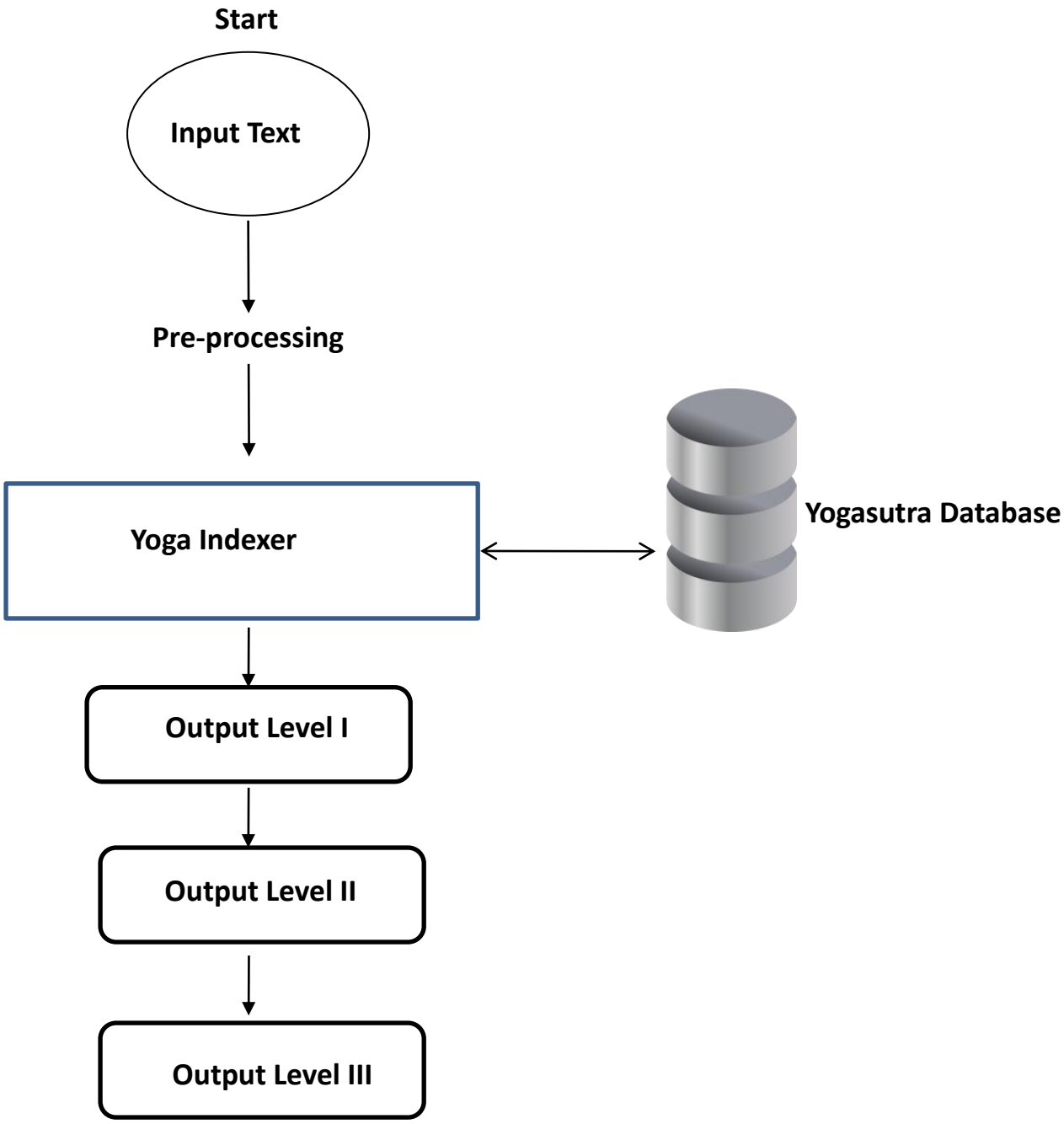

3.2.1. पूर्वप्रक्रिया

इस प्रक्रिया में मुख्यत: ग्रन्थ का सामान्यीकरण किया जाता है। इसके पश्चात आगे की प्रक्रिया को शुरु किया जाता है।

3.2.2. योगसूत्र अनुक्रमणिका और डेटाबेस

इस चरण में अनुक्रमणी पूर्णतः समान तथा आंशिक रूप से समान शब्दों की सूची बनाता है। तदुपरान्त उन शब्दों में किञ्चित् संशोधित करके डेटाबेस में प्रेषित करता है। यदि वह शब्द डेटाबेस में विद्यमान है तो उसे आउटपुट के रूप में प्रदर्शित करता है।

3.2.3. आउटपुट का प्रथम चरण

इस स्तर पर योगानुक्रमणिका के अन्वेषण में प्राप्त सभी शब्दों को आंकिक सन्दर्भ और हाइपरलिंक (*Hyperlink*) के साथ प्रदर्शित करता है।

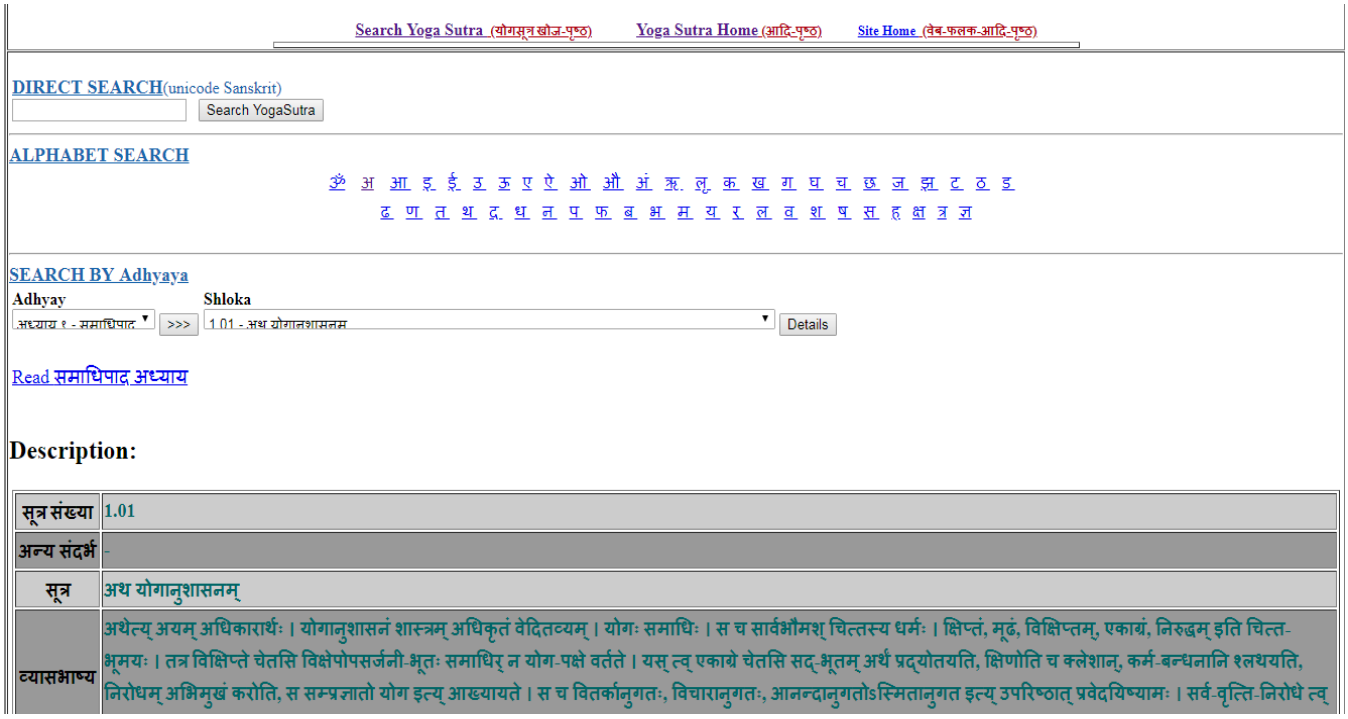

Search Yoga Sutra (योगसूत्र खोज-पृष्ठ) Yoga Sutra Home (आदि-पृष्ठ) Site Home (वेब-फलक-आदि-पृष्ठ)

DIRECT SEARCH(unicode Sanskrit)

Search YogaSutra

ALPHABET SEARCH

ॐ अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं ऋ ऌ क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड
ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ

SEARCH BY Adhyaya

Adhyay Shloka

अध्याय १ - समाधिपाद >>> 1.01 - अथ योगानुशासनम् Details

Read समाधिपाद अध्याय

Description:

सूत्र संख्या	1.01
अन्य संदर्भ	-
सूत्र	अथ योगानुशासनम्
व्यासभाष्य	अथेत्य् अयम् अधिकारार्थः । योगानुशासनं शास्त्रम् अधिकृतं वेदितव्यम् । योगः समाधिः । स च सार्वभौमश् चित्तस्य धर्मः । क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तम्, एकाग्रं, निरुद्धम् इति चित्त-भूमयः । तत्र विक्षिप्ते चेतसि विक्षेपोपसर्जनी-भूतः समाधिर् न योग-पक्षे वर्तते । यस् त्व् एकाग्रे चेतसि सद्-भूतम् अर्थं प्रद्योतयति, क्षिणोति च क्लेशान्, कर्म-बन्धनानि श्लथयति, निरोधम् अभिमुखं करोति, स सम्प्रज्ञातो योग इत्य् आख्यायते । स च वितर्कानुगतः, विचारानुगतः, आनन्दानुगतोऽस्मितानुगत इत्य् उपरिष्ठात् प्रवेदयिष्यामः । सर्व-वृत्ति-निरोधे त्व्

3.2.4. आउटपुट का द्वितीय चरण

हाइपरलिंक से युक्त शब्द पर क्लिक करने से योगसूत्र के मूल स्थान और सन्दर्भ का पता चलता है। इस प्रसंग में यह प्रणाली अन्य ऑनलाइन स्रोत से भी सूचना प्राप्त करने का विकल्प प्रदान करती है। यथा-

3.3. योगानुक्रमणिका का फ्रन्ट एन्ड (मुख पृष्ठ)

योगानुक्रमणिका http://sanskrit.jnu.ac.in/yoga/index.jsp वेबपेज पर उपलब्ध है। यह जावा सर्वर पेज (*JSP*), जावा, एचटीएमएल और जावा का उपयोग करके निर्माण किया गया है। योगानुक्रमणिका अपाचे टॉमकैट ४.० (*Apache Tomcat 4.0*) वेब सर्वर पर रन करता है।

3.3.1. जावा सर्वर पेज

जावा सर्वर पेज तकनीकी की सहायता से गतिशील वेब प्रकरण (*Web Content*) शीघ्रता से तैयार किया जा सकता है। इसकी सहायता से ऐसे एप्लिकेशन (*Application*) विकसित किये जाते हैं जो सर्वर और प्लेटफार्म से स्वतन्त्र होते हैं। इसका फ्रन्ट एन्ड (*Front-End*) मूलतः एचटीएमएल (*HTML*) और UTF-8 स्वीकृत जेएसपी (*JSP*) ही है। अपाचे टॉमकैट सर्वर ४.० (*Apache Tomcat 4.0*) की सहायता से प्रयोगकर्त्ता योगानुक्रमणिका से सम्प्रेषण कर सकता है। जेएसपी (*JSP*) तकनीक जावा कोड और एचटीएमएल दोनों को मिश्रण करके वेब एप्लिकेशन का सृजन करने में समर्थ है। अपाचे सर्वर उस मिश्रित कोड को

रन करता है और प्राप्त परिणाम को केवल एचटीएमएल प्रारूप में देता है। इस प्रणाली में दो जेएसपी पेज हैं। प्रथम मुख्य अन्वेषण पेज और दूसरा सन्दर्भित अन्वेषण पेज है। इसकी सहायता से दूसरे ऑनलाइन स्रोतों से सूचना प्राप्त की जा सकती है। निम्नलिखित कोड जेएसपी (*JSP*) के इनपुट और आउटपुट को UTF-8 में स्थापित करता है-

```
<%@ page
        language="java"
        pageEncoding="utf-8"
        contentType="text/html; charset=utf-8"
        import="java.util.*"
%>
```

निम्नलिखित कोड मेन क्लास, स्ट्रिंग, तथा इंतेजर के विभिन्न वेल्यूस को इनिशियलाइज करता है:

```
<%    Yogasutra ys = new Yogasutra();
        bhashyaFound = 1;
        request.setCharacterEncoding("UTF-8");
        String searchtype = "";
        int bhashya = 0;
        String bhashya = "";
        int adhyaya = 0;
        int sutra = 0;
        String ddfocus="bhashya";
        String token="";
        String adhName="";
        int c=0;
```

```
String searchstr="";
```

निम्नलिखित कोड अन्वेषित शब्द के अर्थात् इनपुट शब्द के विभिन्न वेल्यू को ग्रहण करता है:

```
try{
        ddfocus = request.getParameter("ddfocus");
}
catch(Exception e){
        ddfocus="bhashya";
}
try{
        searchtype = request.getParameter("searchtype");
}
catch(Exception e){
        searchtype="direct";
}
try{
        searchstr = request.getParameter("itext");
}
catch(Exception e){
        searchstr="";
}
try{
        bhashya = Integer.parseInt(request.getParameter("bhashya"));
}
catch(Exception e){
```

```
            bhashya=0;
        }
```

निम्नलिखित कोड विभिन्न स्ट्रिंग के वेल्यू को विधान करता है:

```
if (searchtype==null)
        searchtype="partial";
if (searchstr==null)
        searchstr="";
if (ddfocus==null)
        ddfocus="bhashya";
if (token==null)
        token="";
```

निम्नलिखित कोड टेक्स्ट बॉक्स (*Text box*) का निर्माण करता है और इनपुट शब्द के प्रत्यक्ष अन्वेषण के लिए लिंक का निर्माण करता है:

```
<% if (searchstr.length()>O) { %>
<br><input type=text name=searchstr value="<%= searchstr %>" >
<% } else { %>
<br><input type=text name=searchstr value="<%= token %>" >
<% } %>
<input type=submit value="search Yogasutra Database">
```

सम्पूर्ण योगसूत्र अन्वेषण प्रणाली में इनपुट शब्द को प्रत्यक्ष अन्वेषण हेतु निम्नलिखित कोड लिखा गया है:

```
<% if (searchtype.equals("partial") && searchstr 1 =null &&
        searchstr.length()>O) { %>
<%= ys.searchindex(searchstr) %>
```

अकारादि क्रम में अन्वेषण के लिए कोड इस प्रकार है:

ALPHABET SEARCH

आ

आ

इ

ई

कोई भी वर्ण पर क्लिक करने पर अधः प्रदत्त कोड इनपुट को ग्रहण करता है और अकारादिक्रम (*Alphabet Search*) के द्वारा अन्वेषित परिणाम को दिखाता है:

<% if (searchtype.equals("partial") && searchstr !=null && searchstr.length()>O) { %>

<%= ys.alphabetSearch(searchstr) %>

प्रदत्त अध्यायों में किसी एक अध्याय पर क्लिक करने पर निम्नलिखित कोड अपना इनपुट शब्द प्राप्त कर लेता है:

<td>Adhyaya

<select name="adhyaya">

<option value=1 <% if (adhyay==1){ %> selected <% } %> >अध्याय १-समाधिपाद</option>

<option value=2 <% if (adhyay==2){ %> selected <% } %> >अध्याय २-साधनपाद</option>

<option value=3 <% if (adhyay==3){ %> selected <% } %> >अध्याय ३-विभूतिपाद</option>

<option value=4 <% if (adhyay==4){ %> selected <% } %> >अध्याय ४ - कैवल्यपाद</option>

निम्नलिखित कोड उपर्युक्त कोड द्वारा इनपुट शब्द के आउटपुट के रूप में एक शब्द सूची का निर्माण करता है-

<a
href="http://sanskrit.jnu.ac.in/amara/viewdata.jsp?searchtype=direct&searchstr=<%= word %>">search Amarakosha(JNU)

अधो प्रदत्त कोड के द्वारा अन्य ऑनलाइन स्रोतों का अन्वेषण कर सकते है:

<td>Search other sources: <td>

<a href=searchNet.jsp?word=<%= token %>>search this word on other online

resources

3.3.2. अपाचे टॉमकैट ४.०

योगानुक्रमणिका अपाचे टॉमकैट सर्वर ४.० पर आधारित है। यह सर्वर अपाचे टॉमकैट फाउन्डेशन द्वारा विकसित नि:शुल्क सर्वर सॉफ्टवेयर है जिसेसे सर्वलेट सृजन किये जाते हैं। यह जावा कोड को रन कराने के लिए जावा एचटीएमएल (*Java HTPP*) वेब सर्वर प्रदान करता है। अपाचे टॉमकैट में विन्यास (*Configuration*) और प्रबंधन (*Management*) के लिए उपकरण शामिल भी हैं, लेकिन इसे एक्सएमएल कॉंन्फिगरेशन फाइलों (*XML Configuration Files*) द्वारा सम्पादित किया जा सकता है।

3.4. जावा सर्वलेट तकनीकी

यह सर्वलेट जावा प्रोग्रामिंग की एक शाखा है। यह किसी जावा आधारित सर्वर की सामर्थ्य को बढ़ाता है, जो रिक्वेष्ट (*Request*) और रिस्पांस (*Response*) प्रोग्रामिंग प्रारूप में कार्य करता है। यद्यपि सर्वलेट द्वारा सभी प्रकार के रिक्वेष्ट (*Request*) का परिणाम देता है लेकिन विशेष कर यह वेब सर्वर में उपयोग किया जाता है। ऐसे एप्लिकेशन (*Application*) के लिए एचटीपीपी का तकनीक का उपयोग किया जाता है। वस्तुत: सर्वलेट किसी सर्वर साइट की ओर से अदृश्य होकर कार्य करता है। जावा सर्वर अनेक वेब एप्लिकेशन तैयार करता है। यह जावा APIs, JDBC API जैसे बहुत से डेटाबेस तक पहुँचता है। यह एचटीपीपी सर्वलेट के समूह तक भी पहुँचता है और परिपक्व जावा भाषा के साथ स्थानान्तरण, प्रदर्शन, पुनर्प्राप्ति और संरक्षण को प्रदान करता है। योगानुक्रमणिका के जावा सर्वलेट तकनीक के निम्नलिखित कोड इस प्रकार है-

```
import java.lang.*;
```

```
import java.util.*;
import java.io.*;
import java.sql.*;
```

main class इस प्रकार है:

```
public class Yogasutra{
}
```

निम्नलिखित कोड डेटा फाइल का कॉन्फिगरेशन लोड करता है:

```
public void loadConf( ) {
}
```

अधो लिखित कोड से अध्याय प्राप्त होता है

```
public Hashtable getAdhyaya (int adhyaya) {
return adhyayas;
}
```

निम्नलिखित कोड शब्द अन्वेषण का मुख्य भाग है:

```
public String searchIndex(String word) {
return "<b>Exact Search found " + tknCount + " results for '" + word
+ "'</b><br><b>"+ r + "</b>";
}
```

निम्नलिखित कोड अन्वेषण प्रक्रिया में प्रत्येक वर्ण (*Alphabet*) का परीक्षण करता है:

```
public String alphabetSearch(String alph) {
return "<b>Alphabet search found "+tknCount+" results for
'"+alph+"'</b><br><b>"+ :c + "</b>";
}
```

निम्नलिखित कोड अन्वेषण परिणाम को आरोही क्रम में व्यवस्थित करता है:

```
public void getSutraByid(int sutraaid, String tkn) {
setSutraaid_incremental(sutraid);
setBaseWord(tkn);
ResultSet rs = null;
}
```

निम्नलिखित कोड सूत्रभाष्य को प्रस्तुत करता है:

```
public String getSutraRef() {
return
getBhashyaid () +". "+". "+getAdhyayaid () +". "+". "+getSutraid
incremental()
}
```

3.5. डेटाबेस का पारस्परिक संयोग

डेटाबेस का पारस्परिकसंयोग जेडीबीसी ड्राइवर सॉफ्टवेयर (*JDBC Driver Software*) की सहायता से होता है। यह जावा प्रोग्रामिंग भाषा के लिए एपीआई (*API*) है जो डेटाबेस तक पहुँचने में सहायक है। यह डेटाबेस में अन्वेषण और नवीनीकरण की प्रविधि बताता है। सन माइक्रोसिस्टम्स (*Sun Microsystems*) को जेडीके १.१ (*JDK1.1*) के जेडीबीसी (*JDBC*) भाग के रूप में १९ फरवरी १९९७ को विकसित किया गया है। यह तकनीकी जावा प्रोग्रामिंग भाषा को बहुत बड़े आकड़ों में अन्वेषण करने के लिए आधार तैयार करता है। जेडीबीसी जावा प्रोग्राम एवं डेटाबेस के बीच प्रयोजक का कार्य करता है।

3.6. योगानुक्रमणिका तन्त्र का प्रयोग

इस योगानुक्रमणिका एक वेब सर्वर के रूप में विकसित किया है। यह निम्नलिखित यूआरएल (*URL*) में उपलब्ध है- http://sanskrit.jnu.ac.in/yoga/index.jsp। इस वेब साइट में जा कर बरह (*Baraha*) जैसी किसी भी की-बोर्ड के द्वारा देवनागरी यूनीकोड में

इनपुट दिया जा सकता है। इस पेज में जावा स्क्रिप्ट निर्मित की-बोर्ड भी उपलब्ध है जिसके द्वारा प्रयोगकर्त्ता सरलता से अकारादि-क्रम से इनपुट देकर अन्वेषण कर सकता है।

परिणाम के रूप में हाइपरलिंक (*Hyperlink*) युक्त शब्द प्राप्त होते हैं जिनमें सन्दर्भ और शब्द-सूची जुड़ी होती है। इसके अतिरिक्त प्रणाली तक पहुँचने के लिए ड्रॉप डाउन बॉक्स का उपयोग किया जाता है। प्रयोगकर्त्ता सर्वप्रथम योगसूत्र का चयन कर सकता है इसके पश्चात् सूत्र-संख्या, व्यासभाष्य, तत्त्ववैशारदी टीका और भोजवृत्ति आते हैं।

इसके दूसरे चरण में प्रयोगकर्त्ता योगानुक्रमणिका में से किसी शब्द को क्लिक कर सकता है। उस शब्द पर क्लिक करने के पश्चात् दूसरा पृष्ठ प्राप्त होता है जहाँ उस शब्द को खोजा जा सकता है।

योगानुक्रमणिका का छायाचित्र

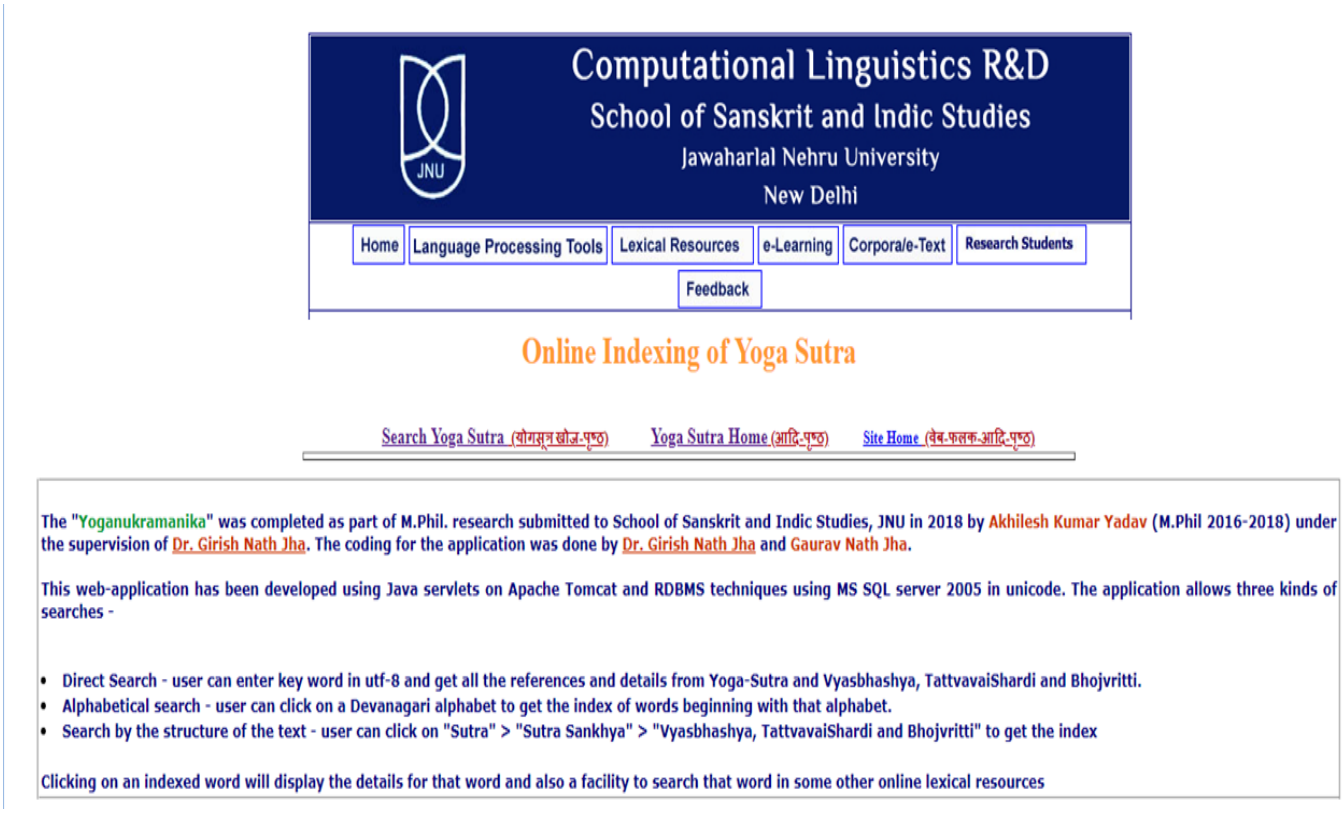

चित्र सं.७. ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका का आदि-पृष्ठ

चित्र सं.८. प्रत्यक्ष अन्वेषण द्वारा परिणाम

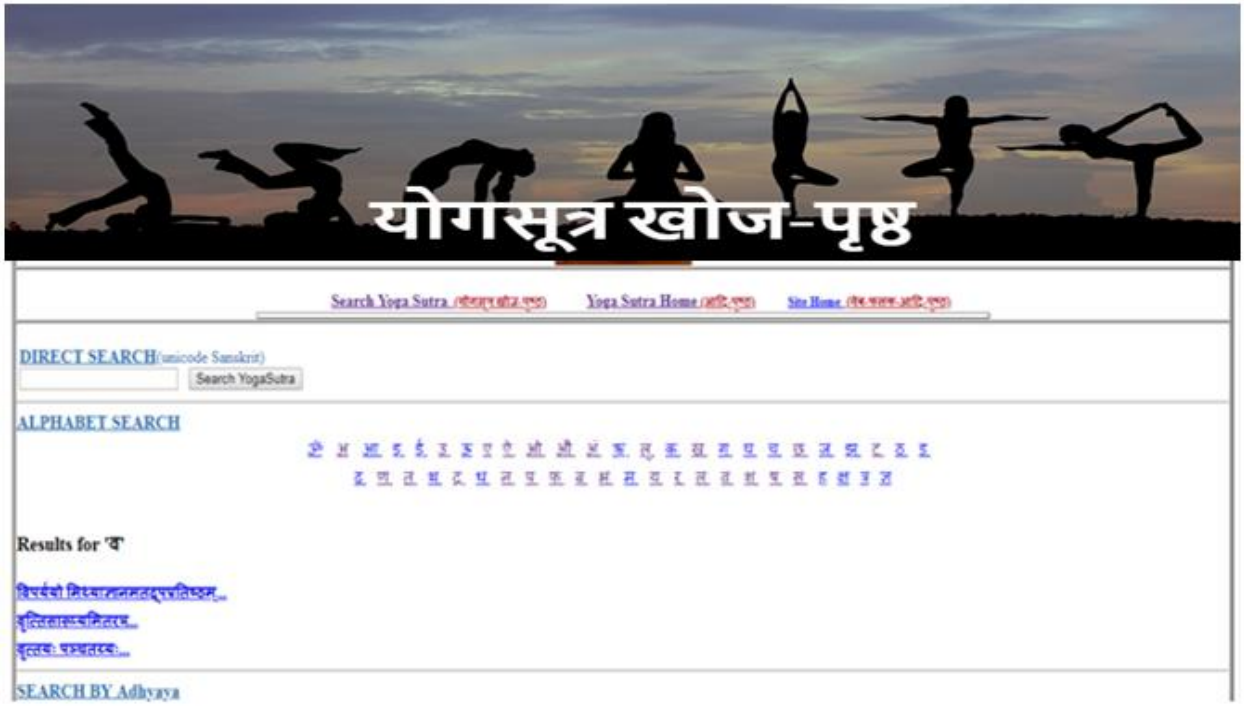

चित्र सं.९. अकारादि-क्रम द्वारा अन्वेषण का परिणाम

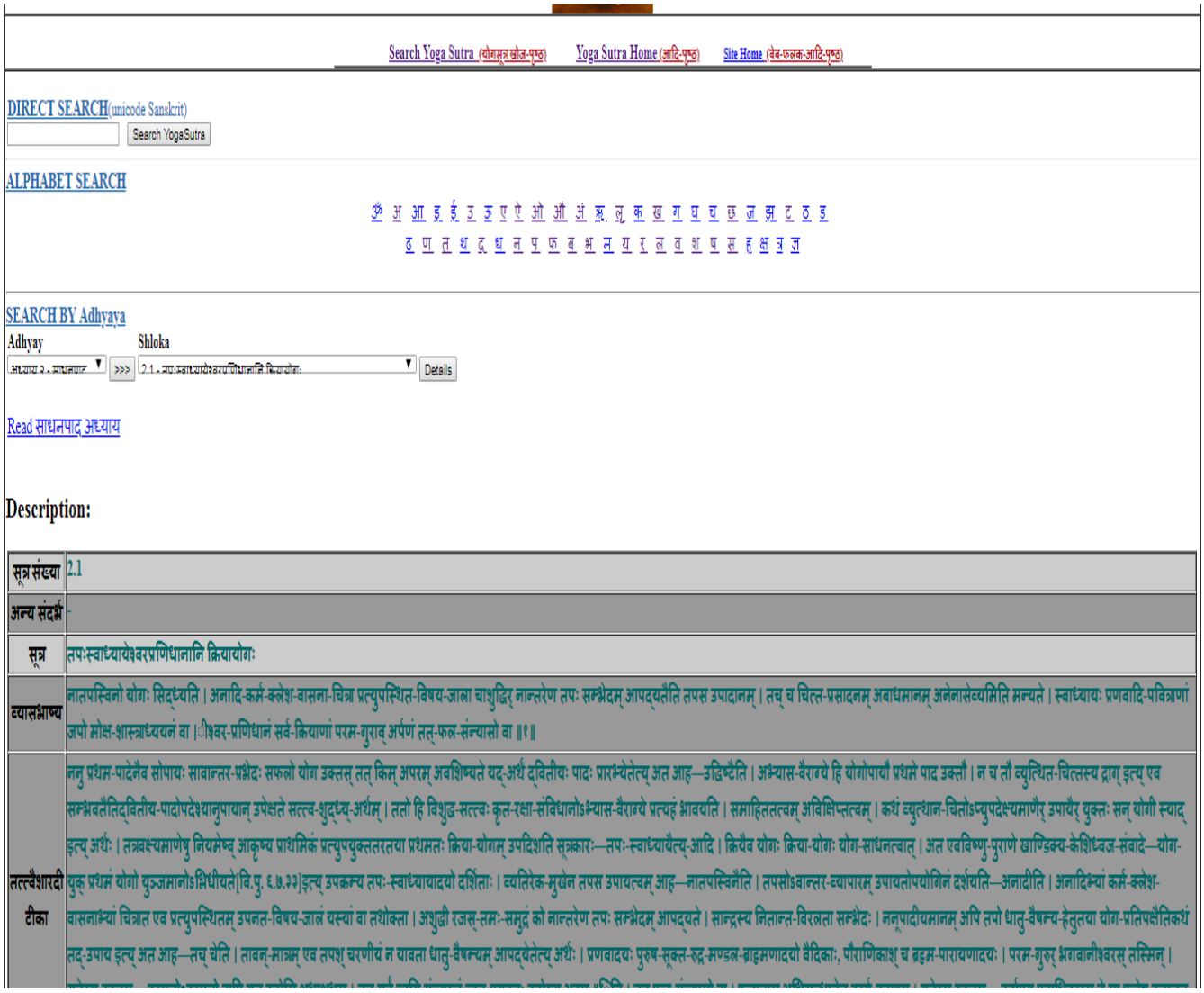

चित्र सं.१०. अध्याय द्वारा अन्वेषण का परिणाम

उपसंहार

संस्कृत में व्यावहारिक और प्रायोगिक शोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध इसी व्यावहारिकता पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। वस्तुत: संगणकीय भाषाविज्ञान संस्कृत को व्यावहारिक और जनोपयोगी बनाने में पूर्णतया समर्थ है। आधुनिक समय में पारम्परिक शास्त्रों के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें डिजिटल स्वरूप देना आवश्यक है। शास्त्रों का डिजिटलीकरण उनकी सतत और व्यापक उपलब्धि सुनिश्चित करता है।

प्रस्तुत शोध की सार्थकता योगदर्शन को व्यावहारिक, प्रायोगिक, जनोपयोगी और विश्वव्यापी बनाने में है। वास्तव में, अधिकाधिक लोगों द्वारा इसका उपयोग किये जाने में ही इसकी व्यावहारिकता निहित है। आज सम्पूर्ण विश्व में योग को लेकर नये-नये अनुसन्धान और प्रयोग हो रहे हैं। ऐसी दशा में योग सम्बन्धी ग्रन्थों का ऑनलाइन डिजिटलीकरण योग के संरक्षण और विकास में सहायक है।

ऑनलाइन अनुक्रमणिका के बिना योगसूत्र और इसके प्रतिनिधि ग्रन्थों को अन्वेषित करना सरल नहीं है। प्रस्तुत शोध में योगसूत्र और इसके प्रतिनिधि ग्रन्थों के मूल-पाठ के आधार पर ऑनलाइन अनुक्रमणिका का निर्माण किया गया है। ऑनलाइन अनुक्रमणिका द्वारा इन ग्रन्थों का अन्वेषण सरलता से किया जा सकता है। यह अन्वेषण प्रणाली इन ग्रन्थों के व्यापक डेटाबेस पर आधारित है।

प्रयोगकर्त्ता डेटाबेस में तीन प्रकार से अन्वेषण कर सकते हैं। ऑनलाइन योगानुक्रमणिका की सहायता से इन ग्रन्थों के सन्दर्भ में सरलतापूर्वक सूचनाएँ प्राप्त हो जाती हैं। प्रस्तुत योगानुक्रमणिका भी योगदर्शन से सम्बन्धित सम्पूर्ण सूचनाएँ देने में सक्षम है। यह अनुक्रमणिका इस लिंक पर उपलब्ध है- http://sanskrit.jnu.ac.in/yoga/index.jsp

परिसीमाएं

योगानुक्रमणिका का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है किन्तु इस कार्य में कुछ परिसीमाएं है-

- इस प्रणाली में इनपुट और आउटपुट दोनों के लिए केवल देवनागरी यूनीकोड है और वर्तमान शोध में अन्य भाषाओं में अन्वेषण का पाठ नहीं दिया गया है।
- इस प्रणाली में उन शब्दों का अन्वेषण किया जा सकता है जो डेटाबेस में उपलब्ध है। शब्दों के अन्य रूपों जैसे- प्रातिपदिक, संज्ञा, सर्वनाम और वचन आदि का नहीं।

- इसमें एक स्ट्रिंग अन्वेषण की सुविधा है इसलिए यह समानार्थी शब्दों का अन्वेषण नहीं कर सकता है।

भावी शोध

वर्तमान शोध में संस्कृत संगणकीय भाषाविज्ञान और मशीन अनुवाद के क्षेत्र में विस्तृत विषय क्षेत्र है। इस विषय क्षेत्र में और भी भावी शोध किया जा सकता है-

- वर्तमान शोध में पातञ्जलयोग के कुछ विशेष ग्रन्थों को ही चयनित किया गया है। वस्तुत: वर्तमान में योग के महत्त्व में वैश्विक स्तर पर वृद्धि हुई है। योग के सिद्धान्तों और प्रायोगिक स्वरूप में लोगों की विश्वव्यापी रुचि जागृत हुई है। इसीलिए योग सम्बन्धी अन्य ग्रन्थों के आधार पर भी अनुक्रमणिका निर्मित की जा सकती है।
- इस युग में अंग्रेजी जैसी भाषा बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। अतः इस योगानुक्रमणिका की भविष्य संशोधन में अंग्रेजी एन्ट्री का होना अति आवश्यक है।
- प्रस्तुत योगानुक्रमणिका में केवल देवनागरी में इनपुट देकर ही सूचनाओं का अन्वेषण किया जा सकता है। भविष्य में इसको अन्य भारतीय भाषाओं के लिए विकसित किया जा सकता है। अधिकाधिक भाषाओं में उपलब्ध होने से इसकी व्यापकता बढ़ेगा और अनेक लोग उपयोग कर सकेंगे।
- अनुक्रमणिका की समृद्ध परम्परा होने के बाद भी संस्कृत के कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की अनुक्रमणिका निर्मित नहीं हो पायी है। प्रस्तुत शोध के आधार पर उनकी अनुक्रमणिका का निर्माण किया जाना चाहिए। इससे विस्तृत और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में सन्दर्भित सूचनाओं को सरलतापूर्वक खोजना आसान हो जायेगा।
- प्रस्तुत अनुक्रमणिका में आउटपुट मात्र संस्कृत में प्राप्त होता है। यह भविष्य में अन्य भाषाओं में आउटपुट के साथ भी विकसित की जा सकती है। इस प्रकार के शोध संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं में एमटीएस (*MTS*) तकनीक को विकसित करने में सहायक होगें।

- इस योगानुक्रमणिका में एक से अधिक स्ट्रिंग को विकसित किया जा सकता है जिससे समानार्थी शब्दों का भी अन्वेषण किया जा सके।
- अन्य रोमान यूनीकोड, HK, SLP1, ITRANS, Roman CSX, Roman Manjushree CSX जैसे इनपुट और आउटपुट की सुविधा उपलब्ध कराया जा सकता है जैसे MW Advanced Search Dictionary में है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्राथमिक स्रोत

उदयवीर शास्त्री (२०००). *पातञ्जलयोगदर्शनम्.* दिल्ली: विजयकुमार गोविन्दराय हासानन्द नई सड़क.

काशीनाथ शास्त्री आगाशे (१९०४). *पातञ्जलयोगसूत्राणि.* पुणे: आनन्दाश्रम मुद्रणालय.

दामोदर शास्त्री, राघवानन्द सरस्वती (१९३५). *पातञ्जल-रहस्य: साङ्ग-योगदर्शनम्.* वाराणसी: चौखम्भा प्रकाशन.

दामोदर शास्त्री (१९४०). *योगदर्शनम्.* वाराणसी: चौखम्भा प्रकाशन.

देवीसहाय पाण्डेय "दीप" (२०१३). *पातञ्जलयोगदर्शनम्.* दिल्ली: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान.

पतञ्जलि (१९५४). *पातञ्जल-महाभाष्य.* वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत सीरीज.

नारायण मिश्र (१९९८) *पातञ्जलयोगदर्शनम्: वाचस्पतिमिश्र कृत तत्त्वकौमुदी, तत्त्ववैशारदी, विज्ञानभिक्षु कृत योगवार्तिक, व्यासभाष्य सहित.* दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन.

बहर्षि ठाकुर, कोशल त्रिपाठी (१९७९). *योगरहस्य: योगभाष्य.* वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन.

हसमुख व्यास (२०१७). *योग दिवाकर.* दिल्ली: आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान.

श्रमस्थ पण्डित (१९०६). *पातञ्जलयोगसूत्राणि.* पुणे: आनन्द आश्रम मुद्रणालय.

श्रीस्वामी ब्रह्मलीनमुनि (संवत २०६७). *पातञ्जलयोगदर्शन (व्यासभाष्यसहित).* वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन.

सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव (२००२). *पातञ्जलयोगदर्शन: व्यासभाष्यसहित.* वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन.

स्वामी ओमानन्दतीर्थ (१९८५). *पातञ्जलयोगप्रदीप.* गोरखपुर: गीताप्रेस.

हरिहरानन्द आरण्य (१९७५). *पातञ्जलयोग दर्शन.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

Nancy C. Mulvany (1994). *Indexing Books*. Chicago: University Press.

Rama Prasad (1998). *Patanjali's Yoga Sutras with the Commentary of Vyasa and the Gloss of Vachaspati Misra*. Allahabad: panini office.

Ricardo Baeza Yates, B. Barla Cambazoglu (2015). *Scalability Challenges in Web Search Engines*. California: Morgan & Claypool publishers.

Tej singh (1969). *Secrets of Patanjali yoga.* Nadsa Farrukhabad: Yoga-Jyoti-Ayurved Ashram.

द्वितीयक स्रोत

आचार्य बलदेव उपाध्याय (१९९७). *संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास.* लखनऊ: उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान.

उदयनाथ झा 'अशोक' (२०१३) *वैदिक साहित्य और संस्कृति.* दिल्ली: विद्यानिधि प्रकाशन.

उदयवीर शास्त्री (२००२). *साख्यदर्शन का इतिहास.* दिल्ली: विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द .

चन्द्रधर शर्मा (१९९०). *भारतीय दर्शन : आलोचना और अनुशीलन.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

जगदीशचन्द्र मिश्र (२०१२). *भारतीय दर्शन.* वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन.

दुर्गाप्रसाद मिश्र (१९९५) साहित्य-सौहित्यम्: (श्रीकान्तरामकिशोरीयम्) दिल्ली: निर्मल प्रकाशन.

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर सम्पादक (चतुर्थ संस्करण). *शुक्लयजुर्वेदीय काण्वसंहिता.* गुजरात: स्वाध्यायमण्ल पारडी.

पाण्डेय यस.के शर्मा (१९९६).*सरलीकृत पुस्तकालय सूचीकरण सिद्धान्त.* दिल्ली: साहित्यिक प्रकाशन.

बलदेव उपाध्याय (२०१३). *पुराण-विमर्श*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन.

बलदेवमिश्र (१९८७). *योगप्रदिपिका.* वाराणसी: चौखम्भा प्रकाशन.

महर्षि दयानन्द सरस्वती. *ऋग्वेद. प्रथम व द्वितीय भाग.* नई दिल्ली: दयानन्द संस्थान.

राम नाथ झा (२०१५). *योग एवं चैतन्य विज्ञान.* दिल्ली: विद्यानिधि प्रकाशन.

रेवतीरमण पाण्डेय (२००३). *समग्र-योग.* वाराणसी: कला प्रकाशन.

हरिकृष्ण गोयन्दका (संवत २०५५). *योग दर्शन: महर्षि पतञ्जलि.* गोरखपुर: गीताप्रेस.

हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा (१९६३). *भारतीय दर्शन की रूपरेखा.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

A B Keith (1920). *A History of Sanskrit Literature*. London: Oxford University Press.

A. R. Chakrabortty, Bhuveneswara Chakrabarty (1984). *Indexing Principles: Processes and Products*. Calcutta: The World Press Private Limited.

Allan Garnham (1988). *Artificial Intelligence: An Introduction*. London: Routledge and Kegan Paul NY.

Aneesha Bakharia (2001). *Java Server Pages*. New Delhi. Prentice Hall of India Pvt. Ltd.

B.K.S. Iyengar (1994). *Light on Patanjal Yoga*. New York: Schocken Books.

B.K.S.Iyengar (1993). *Light on the Yoga Sutras of Patanjali*. London: Thorsons.

Balmukund Dvivedi (1979). *Sanskrit Dictionary*: *Origin and Development*. Allahabad: Smriti Publishers.

Borko, Harold, and Bernier, L. Charles (1978). *Indexing Concepts and Methods*. New York: Academic Press INC.

Bran Boguraev & Ted Briscoe (1989). *Computational Lexicography for Natural Language Processing*. London: Longman.

Chip Hartranft (2003). *The Yoga Sutra of Patanjali: A New Translation with Commentary*. Boston: Shambhala.

D. Frawley and S. S. Kozak (2006). *Yoga for your type: An Ayurvedic Approach to Your Asana Practice*. New Delhi: New Age Books.

Datta and Chatterjee (1939), *An Introduction to Indian Philosophy*. Calcutta: University of Calcutta.

Georg Feuerstein (1979, 1989). *The Yoga Sutras of Patanjali*: *Translation and commentary*. Rochester: Vermont Inner Traditions.

Geshe Michael Roach and Lama Christie McNally (2005). *The Essential Yoga Sutra: Ancient Wisdom for Your Yoga*. New York: Doubleday Three Leaves Press.

Girish N. Jha (2005). *Information Technology Applications for Sanskrit*

Girish N. Jha (2005). *Language Technology in India: A Survey, Computer Society of India*. November 2005.

Girish Nath Jha (2007). *Regional & Linguistic Perspective on Internationalization: the case of Hindi/Sanskrit.*

Gregor Maehle (2006). *Ashtanga Yoga: Practice and Philosophy* . California: Novato New World Library.

H. D. Coulter (2006). *Anatomy of Hatha Yoga: A Manual for Students Teachers and Practitioners*. Delhi: Motilal Banarasidass.

Handke, Jiirgen (1995). *The Structure of the Lexicon: Human versus Machine*. Berlin: Mouton de Gruyter.

J.N. Bhattacharya & Nilanjana Sarkar (2004). *Encyclopedic Dictionary of*

James Allen (2004). *Natural Language Understanding*. New Delhi: Pearson Education Pvt. Ltd.

James Haughton Wood (1914). *The Yoga-System of Patanjali*. Delhi: Motilal Banarsidass.
Jurafsky, Daniel & Martin, H James (2005). *Speech and Language Processing*. New Delhi. Pearson Education (Singapore) Pvt. Ltd.

Karel Werner (1979). *Yoga and Indian Philosophy*. Delhi: Motilal Banarasidass.
Keith (2002). *The Development and History of Sanskrit Literature*. Delhi: Sanjay Prakashan.

L. Kaminoff (2007). *Yoga Anatomy*. Champaign: Human Kinetics Publishers.
Lexicography: Case of Amarakosha, procs of the AsiaLex. Singapore: conference at National University of Singapore, June1-3, 2005.

M. Madhukar Patkar (1981). *History of Sanskrit Lexicography*. New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.

M. Madhukar Patkar (1984). *Descriptive Catalogue of Manuscripts (Vol-111)*. Jammu: Shri Ranbir Sanskrit Research Institute.

M.A.S. Rajan & S.H. Srinivasan (1993). *Sanskrit and Computer-based Linguistics*. Karnataka: Academy of Sanskrit Research Melkote.

M.M Agrawal (2010). *Six Systems of Indian Philosophy*. Varanasi: Chaukhanmbha Vidhya Bhawan.

M.R. Yardi (1996). *The Yoga of Patanjali. Poona*: Bhandarkar Orientel Research Institute.

Macdonell, Translated by Ram Sagar Tripathi (1991). *A History of Sanskrit Literature*. Delhi: Chaukhamba Sanskrit Pratishthan.

Michael Geshe Roach (2005). *The Essential Yoga Sutra: Ancient Wisdom for Your Yoga*. New York: Doubleday Three Leaves Press.

Michael P. Garofalo (2012-13). *Patanjali Yoga Sutra: Index to the English Language Translations*. California: Valley Spirit Yoga, Red Bluff.
Muhammad Riaz (1987). *Advanced Indexing & Abstracting Practices*. Lahore. Nadeem Book House.

P. C. Malshe (2012). *A Medical Understanding of Yoga.* Haridwar: Antar Prakash Center for Yoga.

P. Joseph Russell (2002). *Java Programming*. New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.

R. Grishman (1986). *Computational Linguistics: An Introduction*. New York: Cambridge University Press.

R.G. Prasher (1937). *Index and Indexing Systems*. New Delhi: Medallion Press.

Raslan Mitkov (2003). *The Oxford Handbook of Computational Linguistics*. Oxford: Oxford University Press.

Representation in Sanskrit and Artificial Intelligence. California: Roacs, NASA Ames Research Center, Moffet Field.

Rick Briggs (1985). *Sanskrit & Artificial Intelligence-NASA ,Knowledge*

S. Ramdev (2006). *Yoga Sadhana and Yoga Chikitsa Rahasya*. Haridwar: Divya Prakashan.

S. Roderic, Bucknell, (1994). *Sanskrit Manual*. , Delhi: Motilal Banarsidas.

S.N.Dasgupta (1973). *Yoga as Philosophy and relation.* Delhi: Motilal Banarsiass.

S.N.Dasgupta (1974). *Yoga Philosophy*. Delhi: Motilal Banarsiass.

S.N.Dasgupta (1974).*Yoga Philosophy: In relation to other system of Indian thought*. Delhi: Motilal Varansidass.

S.P.Singh (2010). History of Science, Philosophy and Culture in Indian Civilization: *History of Yoga*, volume xvi part 2. New Delhi: Kalkaji.

Sanskrit (Vol-111). Delhi: Global Vision Publishing House,

Santanu Chattopadhyay (2005). *Compiler Design*. New Delhi: Prentice Hall of India.

Satyapal Narang (1998). Sanskrit ShikSha-Shastra ke Vividha Ayiima. New Delhi: Rashtriya Sanskrit Sansthan.

Shyam Ghosh (1999). *The Original Yoga*. New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.

Swami Jnanananda. *Philosophy of Yoga*. Mysore: Sri Ramakrishna Ashrama.

Swami Jnaneshvara Bharati. *The Yoga Sutra of Patanjali: An Interpretative Translation*.

Swami Venkatesananda (1975). *Enlightened Living A new interpretative translation of the The Yoga Sutra of Maharsi Patanjali*. South Africa: The Chiltern Yoga Trust P.O. Elgin Cape Province.

Swami Vivekananda (2000). *Rajayoga*. kolkata: Advaita Ashrama.

T. K. V. Desikachar (1995). The *Heart of Yoga: Developing a Personal Practice*. Vermont: Rochester Inner Traditions International.

T.N. Rajan, (1981). *Indexing Systems Concepts Models and Techniques*. Calcutta: Indian Association of Special Libraries and Information Centre.

T.S Rukmini (1998). *Yoga Vartika of Vijnanbhikshu*: *translation vol. Vol I, II, III & IV*. New Delhi: Munshiram Manoharlal Pvt. Ltd.

T.S.Rukmani (2001). *Yogasutrabhasyavivarana of Sanskrit: vivrana text with English translation and critical notes alongwith text and English translation of Patanjali's yogasutra and vyasbhasya* ; vol-i-iii. New Delhi: Munsiram Manoharlal Publication.

The Yoga of Patanjali (1996). Poona: M.R.Bhandarkar, Oriental Research institute.

V. Vjayamohan (2016). *Comprehensive treaties on Patanjali Yoga Sutra*. Chennai: Rathna Publications.

Vachaspati Gairola (1997). *Samskrta Siihitya kii Itihiisa*. Varanasi: Chaukhambha Vidya.

William Quan Judge (1889). *The Yoga Sutra of Patanjali: An Interpretation*, Assisted by James Henderson Connelly.California: Theosophical University Press.

शोध एवं लघु शोधप्रबन्ध

कु. अनीता स्वामी (२०१०). *पातञ्जल योग परम्परा में ज्ञानप्रक्रिया का स्वरूप: कतिपय टीकाओं के संदर्भ में*. विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र. नई दिल्ली: जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय.

Diwakar Mani (2008). *Online Indexing of Adiparva of Mahabharata.* . New Delhi: School of Sanskrit and Indic Studies, JNU.

Mukesh Kumar Mishra (2010). *Computational analysis of Sanskrit homonyms in the context of naanaartha varga of Amarakosha.* New Delhi: School of Sanskrit and Indic Studies, JNU.

Paritosh Das (2011). *Index Based Search for Brihadaranyaka Upanisad* . New Delhi: School of Sanskrit and Indic Studies, JNU

Rajneesh Pandey (2011). *Online Indexing of Sushruta Samhita*. New Delhi: School of Sanskrit and Indic Studies, JNU.

कोश ग्रन्थ

दीनानाथ शुक्ला (१९९३). *भारतीय दर्शन परिभाषा कोश.* दिल्ली: प्रतिभा प्रकाशन.

बच्चूलाल अवस्थी (२००४). *भारतीय दर्शन वृहत्कोश. भाग प्रथम से पञ्चम.* दिल्ली: शारदा पब्लिशिंग हाऊस.

Gerald James Larson (2008). *Encyclopedia of Indian Philosophy. vol.x., Yoga : India's Philosophy of Meditation*, Ed, Bhattacharya, Ram Shankar. Delhi: motilal Banarasidass.

Karl H. Potter (1995). *Encyclopedia of Indian Philosophy Vol. I.* Delhi: Motilal Banarasidass.

लेख/पत्रिका

Rama Jain (2010). Yogic Experiences in patanjalis Yoga Sutra, History of Science, Philosophy and Culture in Indian Civilization; vol. xvi, Part-3.

Satya Prakash Singh. Yoga of Patanjali; vol. xvi, Part-2.

अन्तर्जालीय स्रोत

http://sanskrit.jnu.ac.in/index.jsp

https://hi.wikipedia.org/wiki

https://en.wikipedia.org/wiki/Yoga_Sutras_of_Patanjali

http://mea.gov.in/in-focus-article-hi.htm?25096/Yoga+Its+Origin+History+and+Development

https://hi.wikipedia.org/wiki

https://www.yogajournal.com/

http://www.ayush.gov.in/

http://spokensanskrit.org/

https://books.google.co.in/books?

http://bharatvidya.org/Yoga/myweb/yogopnishad_yogashikhopnishad.htm#_ftn3

http://archive.org/details/opensource?and%5B%5D=subject%3A%22Patanjali%22&sort=downloads